badhtikalam@gmail.com | Badhti kalam | 09887454960

भारत व राजस्थान सरकार के विज्ञापनों के लिए स्वीकृत

www.badhtikalam.com

बढ़ती कलम

बिना फेवर, तीखे तेवर

सवाईमाधोपुर व करौली जिले में प्रसारित

वर्ष: 12 अंक: 38 | गंगापुरसिटी. बुधवार 18 अगस्त, 2021 | कुल पृष्ठ 8, मूल्य 3 रु.

शिक्षक भर्ती परीक्षा-2016 में अभ्यार्थियों को मिलेगी नियुक्ति

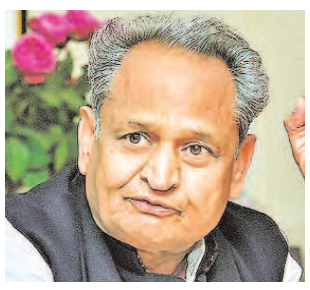

लेवल-2 विज्ञान और गणित की वेटिंग लिस्ट प्रकरण में सरकार ने हाईकोर्ट से याचिका वापस ली, सीधे तौर पर 874 को मिलेगा लाभ

जयपुर (कासं)।

राजस्थान में शिक्षक भर्ती परीक्षा-2016 में वेटिंग लिस्ट प्रकरण को लेकर चल रहे गतिरोध को मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने मंगलवार को समाप्त कर दिया। मुख्यमंत्री गहलोत ने ट्वीट पर जानकारी दी कि 2016 में लेवल-2 विज्ञान और गणित विषय की वेटिंग लिस्ट प्रकरण में दायर अपील को उच्च न्यायालय से वापस ले लिया गया है। प्रदेश के 874 अभ्यर्थियों को इसका सीधा फायदा मिलेगा। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के इस फैसले पर शिक्षा मंत्री गोविंद सिंह डोटासरा ने भी खुशी जाहिर की और लाभार्थियों को बधाई दी। राज्य सरकार ने साल 2016 में विज्ञान और गणित विषय के लेवल-2 के 927 पदों के लिए भर्ती निकाली गई थी। इनमें से सिर्फ 53 पदों पर ही अभ्यार्थियों ने ज्वाइन किया। इसके बाद साल 2018 में नई भर्ती निकलने की वजह से पुराने पदों पर भर्ती प्रक्रिया बंद हो गई। इसके बाद नियुक्ति के लिए बेरोजगार संघ ने न्यायालय में रिक्त पदों की भर्ती को लेकर याचिका दायर की। इसके खिलाफ सरकार ने भी याचिका दायर की। राजस्थान बेरोजगार एकीकृत महासंघ की अपील के बाद सरकार ने अपनी याचिका वापस ले ली है। ऐसे में 2016 के रिक्त चल रहे 874 पदों पर अब अभ्यार्थियों को नियुक्ति मिल पाएगी। राजस्थान बेरोजगार एकीकृत महासंघ के नेता उपेन यादव ने कहा कि पिछले लंबे समय से बेरोजगार छात्र 2016 की भर्ती पर नियुक्ति करने की मांग कर रहे थे। इसको लेकर हाल ही में मुख्यमंत्री से भी बेरोजगार संघ ने अपील की थी। इसके बाद सरकार ने याचिका वापस लेने का फैसला किया है, जो स्वागत योग्य है।

उप राष्ट्रपति अमरुल्ला सालेह ने खुद को अफगानिस्तान का राष्ट्रपति घोषित किया

पहली बार दुनिया के सामने आया तालिबानी प्रवक्ता जबीउल्लाह मुजाहिद

काबुल (एजेंसियां)।

उप राष्ट्रपति अमरुल्ला सालेह ने अपने आप को अफगानिस्तान का राष्ट्रपति घोषित कर दिया है। उन्होंने कहा है कि राष्ट्रपति अशरफ गनी देश के बाहर हैं। इसलिए संविधान के अनुसार अब मैं राष्ट्रपति हूं। मैं सभी से समर्थन की अपील करता हूं।

तालिबान के राजधानी काबुल पर कब्जे के बाद राष्ट्रपति अशरफ गनी ने दो दिन पहले देश छोड़ दिया था। तब ये अटकलें लग रही थीं कि उनके साथ उप राष्ट्रपति अमरुल्ला सालेह ने भी अफगानिस्तान छोड़ दिया है। हालांकि, सालेह के बारे में बताया जा रहा है कि वे अभी पंजशीर में हैं, जहां तालिबान के खिलाफ आगे की रणनीति बनाई जा रही है।

इस बीच तालिबान का प्रवक्ता जबीउल्लाह मुजाहिद पहली बार दुनिया के सामने आया है। वो तालिबान की संस्कृति परिषद का प्रमुख भी है। जबीउल्लाह को दुनिया पहली बार देखेगी, क्योंकि अभी तक उसकी कोई तस्वीर सामने नहीं आई है। प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान वह बताएगा कि तालिबान का शासन कैसा होगा, यानी वह अफगानिस्तान में तालिबानी संस्कृति लागू करने का रोडमैप बताएगा। आशंका है कि जबीउल्लाह महिलाओं पर कई तरह की पाबंदियां लगाने का ऐलान कर सकता है। हालांकि तालिबान ने महिलाओं से सरकार में शामिल होने की अपील करते हुए कहा है कि वे महिलाओं को परेशान नहीं करना चाहते। काबुल एयरपोर्ट और पंजशीर को छोड़ पूरा अफगानिस्तान अब तालिबान के कब्जे में है। इस बीच तालिबान की संस्कृति परिषद का प्रमुख जबीउल्लाह मुजाहिद आज प्रेस कॉन्फ्रेंस करेगा। जबीउल्लाह को दुनिया पहली बार देखेगी, क्योंकि अभी तक उसकी कोई तस्वीर सामने नहीं आई है। प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान वह बताएगा कि तालिबान का शासन कैसा होगा। यानी वह अफगानिस्तान में तालिबानी संस्कृति लागू करने का रोडमैप बताएगा। आशंका है कि जबीउल्लाह महिलाओं पर कई तरह की पाबंदियां लगाने का ऐलान कर सकता है। हालांकि तालिबान ने महिलाओं से सरकार में शामिल होने की अपील करते हुए कहा है कि वे महिलाओं को परेशान नहीं करना चाहते।

दूसरी ओर तालिबान ने सभी अधिकारियों को काम पर वापस आने का आदेश दिया है। एएफपी के मुताबिक काबुल पर कब्जे के दो दिन बाद जारी एक बयान में तालिबान की तरफ से कहा गया है कि सभी अधिकारी जैसे पहले काम कर रहे थे वैसे ही अपना काम पूरे विश्वास के साथ दोबारा शुरू कर दें। बता दें कि काबुल पर तालिबान ने 15 अगस्त को कब्जा किया था। तालिबान के कब्जे से पहले ही राष्ट्रपति अशरफ गनी देश छोड़कर चले गए थे। तुर्की ने तालिबान की तरफ से अंतरराष्ट्रीय मंच से बातचीत की पेशकश का स्वागत किया है। तुर्की की तरफ से कहा गया है कि ये एक अच्छा संकेत है। इसके अलावा तुर्की अफगानिस्तान की सभी पार्टियों से भी बातचीत कर रहा है। आपको बता दें कि तालिबान की तरफ से ये भी कहा गया है कि महिलाएं उनकी सरकार में हिस्सेदार बन सकती हैं।

भारत ने सी-17 विमान से अपने नागरिक निकाले

एएनआई के मुताबिक भारत ने अपने नागरिकों को वहां से सुरक्षित वापस लाने के लिए कमर कस ली है। इसके तहत भारतीय वायु सेना का सी-17 विमान मंगलवार को काबुल से करीब 120 नागरिकों को लेकर जामनगर पहुंचा है। इसमें भारतीय दूतावास के अधिकारी भी शामिल हैं। इसके अलावा दूतावास के दूसरे अधिकारियों को एयरपोर्ट पर ही सुरिक्षत जगहों पर रखा गया है। आपको बता दें कि रविवार को भी भारत ने दो विमानों से अपने दो सौ से अधिक नागरिकों को काबुल से निकाला था। लेकिन सोमवार को काबुल एयरपोर्ट के हालात काफी खराब हो गए थे, जिसकी वजह से वहां पर विमानों की आवाजाही को रोक दिया गया था। इसके बाद जब हालात कुछ सामान्य हुए तो भारतीय वायु सेना का एक अन्य विमान वहां से उड़ान भरने में सफल हो सका था। तालिबान की मौजूदगी के बीच अफगानिस्तान में कई भारतीय सिखों ने वहां के गुरुद्वारे में शरण ली है।

विरोध प्रदर्शन

अफगानिस्तान के खराब होते हालातों को लेकर अब आरोप-प्रत्यारोपों का दौर भी शुरू हो गया है। ग्रीस में इसको लेकर अफगानियों ने अमेरिका के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया है। इन लोगों का कहना है कि अफगानिस्तान को बीच मझधार में छोड़ दिया गया है।

अंतरराष्ट्रीय उठापटक का असर

सोने-चांदी की कीमतों में आया उछाल, सोना 500 रुपए प्रति तोला; वहीं चांदी 800 रुपए प्रति किलो हुई महंगी

जयपुर (कासं)। अंतरराष्ट्रीय बाजार में शुरू हुई उठापटक के साथ ही निवेशक शेयर मार्केट की जगह सोने-चांदी में निवेश करने लगे हैं। जिससे सोने-चांदी की कीमतों में इजाफा होने लगा है। जयपुर सर्राफा कमेटी की ओर से जारी भावों के अनुसार जयपुर में 24 कैरेट सोने की कीमत में 500 रुपए प्रति 10 ग्राम इजाफा हुआ है। जिसके बाद 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत बढ़कर 48 हजार 850 रुपए पर पहुंच गई है।

जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत में 500 रुपए प्रति 10 ग्राम इजाफा हुआ है। जिसके बाद 10 ग्राम 22 कैरेट सोने की कीमत बढ़कर 46 हजार 500 रुपए पर पहुंच गई है। इसके साथ ही चांदी की कीमत में भी 800 रुपए प्रति किलो का इजाफा हुआ। जिसके बाद जयपुर में 1 किलो चांदी रिफाइन की कीमत 65 हजार 900 रुपए पर पहुंच गई है। जयपुर के सर्राफा व्यापारी राकेश खंडेलवाल ने बताया कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में हो रहे बदलाव की वजह से फिर से सोने-चांदी की कीमत बढ़ने लगी है। भविष्य में अगर इसी तरह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक अस्थिरता का दौर लंबा चला, तो सोने चांदी की कीमत में और अधिक इजाफा देखने को मिल सकता है।

75वां स्वतंत्रता दिवस

#राजस्थान_सतर्क_है

भारत का संविधान
उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**
प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और
राष्ट्र की एकता और अखंडता
सुनिश्चित करने वाली **बंधुता** बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

मूल कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;
(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;
(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;
(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;
(ड) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरूद्ध है;
(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे;
(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणि मात्र के प्रति दयाभाव रखे;
(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;
(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;
(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाइयों को छू ले;
(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

आजादी के 75वें वर्ष में प्रवेश के शुभ अवसर पर मूल कर्तव्यों को अंगीकृत कर हम सब सत्य, अहिंसा और शांति के मार्ग पर चलते हुए प्रदेश को उन्नति की ओर बढ़ाएं।

सभी प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिन्द, जय भारत
अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री, राजस्थान

1 घर से बाहर निकलें तो हमेशा मास्क पहनें
2 आपस में दो गज की दूरी बनाए रखें
3 अपने हाथ साबुन से धोते रहें या सैनेटाइज़ करें
4 वैक्सीन जरूर लगवाएं

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

राजस्थान संवाद

सम्पादकीय

अफगानी अवाम की बड़ी शिकस्त

अफगानिस्तान में तालिबान द्वारा बलपूर्वक सत्ता परिवर्तन विश्व समुदाय के लिए शुभ नहीं है। तालिबान ने अब तक न अपनी विचारधारा बदलने का संकेत दिया है, और न अफगानिस्तान के संविधान को स्वीकार किया है। अल-कायदा जैसे आतंकी संगठनों के खिलाफ भी उसने कोई सार्वजनिक बयान नहीं दिया है। उसमें अगर अंदरूनी तौर पर थोड़ा-बहुत परिवर्तन हुआ भी हो, तो वह अब तक जाहिर नहीं हुआ है। इसका अर्थ है कि न तो उसकी कार्यशैली बदली है और न ही वैचारिक रूप से वह बदला है। कट्टरता अब भी उसकी सोच का मूल है। ताजा घटनाक्रम को हमें पाकिस्तान से जोड़कर भी देखना होगा। तालिबान का इतनी तेजी से बढना संभव नहीं होता, यदि उसको इस्लामाबाद से सामरिक मदद नहीं मिलती। अमेरिका के ज्वॉइंट चीफ ऑफ स्टाफ के पूर्व प्रमुख एडमिरल माइक मुलेन ने काफी पहले कहा था कि हक्कानी नेटवर्क एक तरह से पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई का ही अंग है। यही वह संगठन है, जो अफगानिस्तान में भारतीय हितों पर चोट करता रहता है और तालिबान इसी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। जाहिर है, तालिबान के पांव जमा लेने से हिन्दुस्तान पर खतरा बढ़ गया है। पिछली सदी के 90 के दशक में अफगानिस्तान में जब युद्ध का अंत हुआ था, उसके बाद से ही कश्मीर में दहशतगर्दी शुरू हुई थी। पाकिस्तान अपने मुजाहिदीन को अफगानिस्तान से कश्मीर ले आया था। यह आशंका फिर से सिर उठाने लगी है। वैसे, तालिबान से सबसे अधिक खतरा खुद पाकिस्तान को है। इस घटनाक्रम से तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) को बल मिलेगा, जिससे पाकिस्तान के तालिबानीकरण का अंदेशा है। अफगानिस्तान छोटा सा मुल्क है, मगर पाकिस्तान परमाणु हथियारों से लैस। ऐसे में, यदि पाकिस्तान में तालिबान का प्रभाव बढ़ा, तो दुनिया के तमाम अमनपसंद राष्ट्र मुश्किल में आ सकते हैं। पिछले दशक में ऐसी कई घटनाएं हुई हैं, जिनमें तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान की संलिप्तता देखी गई है। उसके निशाने पर न सिर्फ आम नागरिक रहे हैं, बल्कि उसने पाकिस्तानी फौज के अति-सुरक्षित ठिकानों पर भी हमले किए हैं। मई, 2011 में मेहरान नेवल बेस और अगस्त, 2012 में कामरा एयर बेस पर हमला इसका बड़ा उदाहरण है। पाकिस्तान भले दुनिया को यह कहकर भ्रम में रखना चाहता हो कि तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान और अफगान तालिबान में कोई संबंध नहीं है और अफगान तालिबान च्अच्छेज् हैं, लेकिन असलियत में इन दोनों गुटों में कोई मतभेद नहीं है। अफगानिस्तान पर तालिबान के नियंत्रण के दुष्परिणाम पूरे मध्य एशिया में दिख सकते हैं। तुर्किस्तान के ईस्ट तुर्किस्तान इस्लामिक मूवमेंट (ईटीआईएम), उज्बेकिस्तान के इस्लामिक मूवमेंट ऑफ उज्बेकिस्तान (आईएमयू), ताजिकिस्तान में ताजिक तालिबान कहे जाने वाले जमात अंसारुल्लाह जैसे तमाम आतंकी गुटों के साथ तालिबान के रिश्ते जगजाहिर हैं। पड़ोसी देशों में काम कर रहे ये संगठन अब और मुखर हो सकते हैं। मगर पूरे घटनाक्रम का सबसे ज्यादा असर अमेरिका की बाइडन सरकार की विदेशी नीति की विश्वसनीयता पर पड़ा है। अपना मुंह छिपाने के लिए वह लाख बहाने बनाए, लेकिन सच यही है कि अफगानिस्तान में अमेरिका को करारी हार मिली है। 11 सितंबर, 2001 को च्ट्विन टावरज् पर हमले के बाद से अफगानिस्तान में अमेरिका ने सैन्य दखल शुरू किया था। यहीं से अफगानिस्तान में एक सांविधानिक और लोकतांत्रिक परंपरा की शुरुआत हुई। इस प्रक्रिया को दोहा समझौता से झटका मिला, जब अमेरिका ने तालिबान से समझौता सिर्फ इसलिए किया कि अमेरिकी फौजें सुरक्षित बाहर निकल जाएं और तालिबान आतंकवादियों को पनाह नहीं दे। इस कवायद में अफगानिस्तान के भविष्य को अधर में छोड़ दिया गया। साफ है, अफगानिस्तान, उसकी जनता और उसके सभ्य समाज को सबसे बड़ी हार मिली है। उन्होंने बड़े ही मुश्किल व चुनौतीपूर्ण समय में लोकतंत्र का समर्थन किया था और मानवाधिकारों को बहाल करने की तरफ बढ़े थे। सवाल यह है कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय को अब क्या करना चाहिए? चूंकि खून-खराबा इस मसले का समाधान नहीं है, इसलिए बातचीत की मेज से ही रास्ता निकालने का प्रयास किया जाना चाहिए। विश्व समुदाय को देखना होगा कि अंतरराष्ट्रीय कायदे-कानूनों के प्रति जो प्रतिबद्धता तालिबान ने जताई है, क्या वह उस पर खरा उतर रहा है? तालिबान को यह भी साफ करना होगा कि वह किसी बाहरी ताकत के प्रभाव में आकर काम नहीं कर रहा। यह संयुक्त राष्ट्र अथवा अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों की सदस्यता हासिल करने की एक अनिवार्य शर्त है। यह मुद्दा जल्द उठेगा, क्योंकि सितंबर में संयुक्त राष्ट्र आमसभा की बैठक होने वाली है। इसमें तालिबान यह उम्मीद नहीं पाल सकता कि उसे स्वत- अफगानिस्तान की सीट हासिल हो जाएगी। ब्रिटिश प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन ने कहा है कि तालिबान को अंतरराष्ट्रीय मान्यता नहीं मिलनी चाहिए। वहां जो भी च्अंतरिम सरकारज् बनेगी, उस पर तालिबान हावी रहेगा। अब्दुल्ला अब्दुल्ला सत्ता हस्तांतरण की शर्तों पर समझौते को अंतिम रूप देने के लिए दोहा जा रहे हैं। यह और कुछ नहीं, उस बदलाव को वैधता देना होगा, जो पहले ही बलपूर्वक किया जा चुका है। तालिबान के कब्जे वाले क्षेत्र से भाग रहे आम अफगान नागरिकों की तस्वीरें तालिबान के च्असल चरित्रज् का प्रतीक हैं। यदि तालिबान लोगों की मुश्किलों को दूर करने वाली ताकत होती, तो जनता उसका स्वागत करती। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद द्वारा इस घटना की निंदा ही काफी नहीं है। उसे यह मांग भी करनी चाहिए कि अफगानिस्तान में संयुक्त राष्ट्र की देख-रेख में चुनाव कराए जाएं। तालिबान को आखिरकार यह साबित करना ही होगा कि उसे आम लोगों का समर्थन हासिल है। रही बात भारत की, तो तालिबान के रवैये को देखकर नई दिल्ली रुख तय करे। देखना होगा कि तालिबान अंतरराष्ट्रीय मानदंडों के मुताबिक किस जिम्मेदारी से शासन कर रहा है। हमें फिलहाल किसी ऐसे शासन से रिश्ता बनाने के लिए कोई आपाधापी नहीं करनी चाहिए, जिसके भविष्य के व्यवहार पर सवाल हो।

> **"अमेरिका के ज्वॉइंट चीफ ऑफ स्टाफ के पूर्व प्रमुख एडमिरल माइक मुलेन ने काफी पहले कहा था कि हक्कानी नेटवर्क एक तरह से पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई का ही अंग है।**

हमारे बुजुर्ग हमारे संस्कारों की विरासत

जीवन-काल एक सतत, अपरिवर्तनीय, सार्वभौमिक प्रक्रिया है, जो माँ की कोख से शुरू होकर व्यक्ति की मृत्यु तक होती है। हालाँकि जिस आयु में किसी की शारीरक क्षमता में गिरावट आती है तथा किसी हद तक शारीरिक एवं आर्थिक रूप से दूसरों पर निर्भर हो जाता है, उसे सामान्यत- जीवन के वृद्ध चरण के रूप में माना जा सकता है। संस्कार और संक्रमण दोनों ही एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति मे प्रसारित होते है, संस्कार जगत मे मानव सभ्यता की स्थापना करते है जबकि संक्रमण बीमारी फैला कर मानव सभ्यता का विनाश करता है..!! हमारे बुजुर्ग हमारे संस्कारों की विरासत है, वर्तमान में समाज में बुजुर्गों की समस्या अकल्पनीय है, वृद्धावस्था अभिशाप सदृश होती जा रही है, उनका जीवनयापन बहुत ही कठिन होता जा रहा है, कोई चलने में असमर्थ तो कोई अपाहिज सदृश बिस्तर को ही अपनी नियति मानकर जीवन निर्वाह कर रहे हैं।

कुछ मज़बूरीवश लाचार हैं, इस कारण से हमारे बुजुर्गों का शेष जीवन अधीरता एवं व्याकुलता से व्यतीत हो रहा है, अपनों की प्रतीक्षारत उनकी पथराई आँखे टक-टकी बाँधे घर की दहलीज़ पर ही जमीं रहती हैं, कि कोई अपना आये तो उससे दो बातें कर अपना मन हल्का कर सके। समस्या यह भी है कि आज की नौजवान पीढ़ी अपने बुजुर्गों के पास बैठना या उनसे बातें करना समय ख़राब करने जैसा समझती हैं। जबकि हमें अपने वृद्धजनों को यह एहसास नहीं होने देना चाहिये कि वे वृद्ध हो गए हैं बल्कि उनके मनोबल को ऊँचा उठाने की कोशिश करनी चाहिए। उनके पास कुछ समय बिताकर उन्हें भी आनंद की अनुभूति का अहसास करवाने का प्रयास करना चाहिए। ऐसा भी कहा जाता है कि जिस परिवार में बुजुर्गों का सम्मान होता हैं वहाँ देवताओं का वास होता है।

वृद्ध व्यक्तियों के कल्याण और देखभाल के लिये हमें पहले से मौजूद सामाजिक समर्थन प्रणालियों/पारंपरिक सामाजिक संस्थानों जैसे- परिवार तथा रिश्तेदारी, पड़ोसियों से बेहतर संबंध, सामुदायिक संबंध व सामुदायिक भागीदारी को पुनर्जीवित करने पर ध्यान देना चाहिये और परिवार के लोगों को बुजुर्गों के प्रति संवेदनशीलता दिखानी चाहिये। भारत को अक्सर एक युवा समाज के रूप में चित्रित किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप जनसांख्यिकीय लाभांश प्राप्त होता है।

राष्ट्रीय बुजुर्ग नीति, 60+ आयु वर्ग के लोगों को बुजुर्ग के रूप में परिभाषित करती है। हाल ही में प्रधानमंत्री आर्थिक सलाहकार परिषद (EAC-PM) ने बुजुर्गों के लिये जीवन का गुणवत्ता सूचकांक जारी किया है। देश में कुल आबादी के प्रतिशत के रूप में बुजुर्गों की हिस्सेदारी वर्ष 2001 में लगभग 7.5 प्रतिशत थी, जो बढ़कर वर्ष 2026 तक लगभग 12.5 प्रतिशत हो जाएगी तथा वर्ष 2050 तक 19.5 प्रतिशत से अधिक होने की उम्मीद है। प्रधानमंत्री आर्थिक सलाहकार परिषद (EAC-PM) एक गैर-संवैधानिक, गैर-सांविधिक, स्वतंत्र निकाय है, जिसका गठन भारत सरकार, विशेष रूप से प्रधानमंत्री को आर्थिक और इससे संबंधित मुद्दों पर सलाह देने के लिये किया गया है।

> **"वृद्ध व्यक्तियों के कल्याण और देखभाल के लिये हमें पहले से मौजूद सामाजिक समर्थन प्रणालियों/पारंपरिक सामाजिक संस्थानों जैसे- परिवार तथा रिश्तेदारी, पड़ोसियों से बेहतर संबंध, सामुदायिक संबंध व सामुदायिक भागीदारी को पुनर्जीवित करने पर ध्यान देना चाहिये**

स्वास्थ्य प्रणाली स्तंभ का अखिल भारतीय स्तर पर उच्चतम राष्ट्रीय औसत 66.97 है, जिसके बाद सामाजिक कल्याण स्तंभ का स्कोर 62.34 है। वित्तीय कल्याण का स्कोर 44.7 है, जो शिक्षा प्राप्ति और रोज़गार स्तंभ में 21 राज्यों के निम्न प्रदर्शन से कम है, यह सुधार की संभावना को प्रदर्शित करता है। राज्यों ने आय सुरक्षा स्तंभ में विशेष रूप से खराब प्रदर्शन किया है क्योंकि आधे से अधिक राज्यों का आय सुरक्षा में राष्ट्रीय औसत से कम स्कोर है, जो सभी स्तंभों में सबसे कम है।

सूचकांक के चार स्तंभ और आठ उप-स्तंभ है....

चार स्तंभ - वित्तीय कल्याण, सामाजिक कल्याण, स्वास्थ्य प्रणाली और आय सुरक्षा ।

आठ उप-स्तंभ - आर्थिक सशक्तीकरण, शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति और रोजगार, सामाजिक स्थिति, शारीरिक सुरक्षा, बुनियादी स्वास्थ्य, मनोवैज्ञानिक कल्याण, सामाजिक सुरक्षा तथा पर्यावरण को सक्षम बनाना।

राजस्थान और हिमाचल प्रदेश क्रमश: वृद्ध और अपेक्षाकृत वृद्ध राज्यों में शीर्ष स्कोरर हैं। वृद्ध राज्य 5 मिलियन से अधिक की वृद्ध आबादी वाले राज्यों को संदर्भित करता है, जबकि अपेक्षाकृत वृद्ध राज्य 5 मिलियन से कम की वृद्ध आबादी वाले राज्यों को संदर्भित करता है। चंडीगढ़ और मिज़ोरम केंद्रशासित प्रदेश और उत्तर-पूर्वी राज्यों की श्रेणी में शीर्ष स्कोरर हैं।

लोगों की सामान्य आयु के उभरते मुद्दों में से एक महिलाओं की अधिक आयु प्रत्याशा है, जिसके परिणामस्वरूप वृद्धावस्था के कुल प्रतिशत में महिलाओं का अनुपात पुरुषों की तुलना में अधिक होता है। भारत में विश्व स्तर पर सबसे कमज़ोर सामाजिक सुरक्षा तंत्र है क्योंकि यह अपने सकल घरेलू उत्पाद का केवल 1त्न पेंशन पर खर्च करता है।

वर्तमान वृद्ध व्यक्ति की विशिष्ट ज़रूरतों, प्रेरणाओं और वरीयताओं को पूरा करने तथा सक्रिय आयु को बढ़ावा देने के साथ उन्हें समाज में योगदान करने का मौका देने की आवश्यकता है। स्वस्थ आयु में वृद्धि सुनिश्चित करने के लिये अच्छा स्वास्थ्य समाज के मूल में है। जैसे-जैसे भारत में वृद्ध लोगों की जीवन प्रत्याशा बढ़ती है, हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि लोग अधिक आयु तक जीवित रहें, स्वस्थ जीवन जिएँ, जो वृद्ध व्यक्तियों, उनके परिवारों और समाज के लिये अधिक महत्त्वपूर्ण है।

स्वस्थ आयु में वृद्धि के दशक को 73वें विश्व स्वास्थ्य सभा (विश्व स्वास्थ्य संगठन की निर्णय लेने वाली संस्था) द्वारा 2020 में समर्थन दिया गया था। सतत् विकास के लिये एजेंडा 2030 किसी को पीछे नहीं छोड़ने और यह सुनिश्चित करने हेतु तत्पर है कि सतत् विकास लक्ष्य (स्ष्ठत्र) समाज के सभी वर्गों के लिये हर आयु में वृद्ध व्यक्तियों सहित सबसे कमज़ोर लोगों का समावेश करेगा।

सीनियर केयर एजिंग ग्रोथ इंजन (SAGE) : सेज पोर्टल (SAGE Portal) विश्वसनीय स्टार्टअप्स के माध्यम से वरिष्ठ नागरिकों की देखरेख में उपयोगी उत्पादों तथा सेवाओं को प्रदान करने वाला 'वन-स्टॉप एक्सेस' होगा। वृद्ध व्यक्तियों के लिये एकीकृत कार्यक्रम (IPOP) योजना का मुख्य उद्देश्य आश्रय, भोजन, चिकित्सा देखभाल और मनोरंजन के अवसर आदि जैसी बुनियादी सुविधाएँ प्रदान करके वृद्ध व्यक्तियों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है। राष्ट्रीय वयोश्री योजना (RVY) इसका उद्देश्य गरीबी रेखा से नीचे (BPL) की श्रेणी के वरिष्ठ नागरिकों को शारीरिक सहायता और जीवन यापन के लिये आवश्यक उपकरण प्रदान करना है, जो कम दृष्टि, श्रवण दोष, दाँतों की हानि तथा चलने में अक्षमता जैसी आयु से संबंधित अक्षमताओं से पीड़ित हैं। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना इस योजना के तहत भारत सरकार द्वारा निर्धारित मानदंडों के अनुसार 60 वर्ष और उससे अधिक आयु के व्यक्तियों और गरीबी रेखा से नीचे (BPL) जीवन यापन करने वाले परिवारों से संबंधित व्यक्तियों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। इसमें 60-79 वर्ष आयु वर्ग के व्यक्तियों को 500 रुपए प्रतिमाह तथा 80 वर्ष और उससे अधिक आयु के व्यक्तियों को 800 रुपए प्रतिमाह की केंद्रीय सहायता प्रदान करने का प्रावधान है। प्रधानमंत्री वय वंदना योजना (PMVVY) यह वरिष्ठ नागरिकों के लिये एक पेंशन योजना है, जिसके तहत मासिक, त्रैमासिक, अर्द्ध-वार्षिक या वार्षिक आधार पर 10 वर्षों की अवधि के लिये गारंटीड रिटर्न की व्यवस्था की गई है। यह विशेष रूप से उन लोगों के लिये उपलब्ध है जिनकी आयु 60 वर्ष और उससे अधिक है। माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण तथा कल्याण (MWPSC) अधिनियम, 2007 इसका मुख्य उद्देश्य माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों तथा उनके कल्याण के लिये आवश्यकता-आधारित रखरखाव या देखभाल सुनिश्चित करना है।

1 अक्तूबर को अंतर्राष्टीय वृद्धजन दिवस (International Day of Older Person) पर वरिष्ठ नागरिकों की सराहनीय सेवा करने वाले संस्थानों और वरिष्ठ नागरिकों को उनकी उत्तम सेवाओं तथा उनके जीवन की ऐतिहासिक उपलब्धियों के लिये यह वयोश्रेष्ठ राष्टीय सम्मान प्रदान किया जाता है। यह एक अतिसूक्ष्म सा प्रयास है जिससे हमारे देश के बुजर्गों में सकारात्मकता की सुरसरिता अविरल प्रवाहित होती रहे। **-छगन लाल शर्मा**

तालिबानी आफत

अफगानिस्तान पर तालिबान का कब्जा न केवल भारत, बल्कि पूरी दुनिया के लिए खतरे की घंटी

अफगानिस्तान पर तालिबान का कब्जा न केवल इस देश, बल्कि पूरी दुनिया के लिए खतरे की घंटी है। अपनी हैवानियत के लिए कुख्यात तालिबान आनन-फानन अफगानिस्तान पर इसीलिए काबिज हो गए, क्योंकि एक तो अमेरिका ने अफगान सरकार को उसके हाल पर छोड़ दिया और दूसरे, अफगानिस्तान की सेना नाकारा साबित हुई। यह हैरान करता है कि तीन लाख की अफगानिस्तानी सेना ने करीब 80 हजार तालिबान जिहादियों के सामने घुटने टेक दिए। उसके शर्मनाक समर्पण ने यही बताया कि अमेरिकी प्रशासन के इन दावों में कोई दम नहीं था कि अफगान सेना अच्छी तरह प्रशिक्षित है और वह तालिबान का सामना करने में सक्षम है। चूंकि ज्यादातर जगहों पर इस सेना ने बिना लड़े हथियार डाल दिए इसलिए तालिबान देखते ही देखते काबुल में आ धमके। तालिबान के काबुल में घुसते ही अफगानिस्तान के राष्ट्रपति अशरफ गनी और उनके साथी जिस तरह देश छोड़कर भाग गए, उससे यही पता चला कि वे हालात का सामना करने के लिए तनिक भी तैयार नहीं थे। संकट के समय चुपचाप देश से भागने वाले अशरफ गनी ने अपनी बची-खुची प्रतिष्ठा ही गंवाई। ऐसा लगता है कि वह और उनके साथियों की दिलचस्पी सत्ता की मलाई चखने में अधिक थी और इसीलिए वह अपनी सरकार और सेना में फैले उस भ्रष्टाचार पर अंकुश नहीं लगा सके, जिसने उन्हें खोखला कर दिया था। यदि अशरफ गनी का शासन-प्रशासन खोखला नहीं होता तो उसने इस तरह मैदान नहीं छोड़ा होता। अब अफगानिस्तान का भविष्य तालिबान के हाथों में है, लेकिन वह बहुत भयावह नजर आ रहा है। तालिबान को समर्थन एवं संरक्षण देने वाले पाकिस्तान और उसके आका चीन को छोड़ दें तो सारी दुनिया यही मान रही है कि अब अफगानिस्तान मध्ययुगीन बर्बरता का शिकार बनेगा। भले ही तालिबान यह जताने की कोशिश कर रहा हो कि वह सुधर गया है, लेकिन इसके कहीं कोई संकेत नहीं दिख रहे हैं। अफगानिस्तान में जो कुछ हो रहा है, उससे यही लगता है कि यहां के लोगों की जिंदगी नरक बनने जा रही है। इसका प्रमाण हैं काबुल हवाईअड्डे के दिल दहलाने वाले दृश्य। हजारों लोग येन-केन-प्रकारेण देश से निकलने के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं। इन हालात के लिए सीधे तौर पर बाइडन प्रशासन जिम्मेदार है, जिसने बिना सोचे-समझे अपनी सेनाओं को वहां से निकालने का फैसला कर लिया। अफगानिस्तान में तालिबान के कब्जे के बाद भारत को न केवल सतर्क हो जाना चाहिए, बल्कि उन आशंकाओं के निदान में जुट जाना चाहिए, जिनके तहत यह माना जा रहा है कि पाकिस्तान इस आतंकी समूह का इस्तेमाल भारतीय हितों के खिलाफ कर सकता है। -डॉ. सुमनलता शर्मा

अमृत काल की विदेश नीति

विदेश नीति तभी रंग लाएगी जब हम आर्थिक रूप से सक्षम हों और अन्य देशों को पहुंचाएं मदद

स्वतंत्रता के 75वें वर्ष में प्रवेश के अवसर पर यह स्वाभाविक है कि हम पीछे मुड़कर अनेक क्षेत्रों में देश की दिशा और प्रगति का मूल्यांकन करें और भविष्य के लिए इतिहास से सबक लें। बीते 75 वर्षों में लोकतंत्र, संघीय ढांचे, सामाजिक अवस्था, आर्थिक स्थिति और सांस्कृतिक परिवेश के साथ-साथ एक महत्वपूर्ण मुद्दा विदेश नीति भी है, जिस पर हमें आत्मनिरीक्षण करना चाहिए। कोई स्वाधीन च्राष्ट्र-राज्यज् ऐसा नहीं हो सकता, जिसका अस्तित्व अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उसकी भूमिका पर आधारित न हो। भारत आज जो भी है, वह केवल आंतरिक घटनाक्रमों के कारण ही नहीं, बल्कि विश्व में अपने दर्जे की वजह से भी है। गुजरे 75 वर्षों की विश्व व्यवस्था में भारत किस प्रकार का किरदार निभाता रहा, इसका विवेचन हम एक प्रमुख बहस च्आदर्शवाद बनाम यथार्थवादज् के माध्यम से कर सकते हैं। 1947 में देश जब सैकड़ों वर्षों के दासत्व से मुक्त हुआ तो हमारी प्रवृत्ति च्उत्तर उपनिवेशवादी राज्यज् की थी। पश्चिमी साम्राज्यवाद और शोषण के सबसे पीड़ित समाज में से एक होते हुए भी हम विकासशील देशों के हितों की रक्षा करने को आतुर थे। प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की गुटनिरपेक्ष नीति इसी सोच से उत्पन्न हुई। महाशक्तियों के प्रति संदेह और समान दूरी एवं एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के पिछड़े देशों के संग मित्रता उस युग के सिद्धांत थे। एक गरीब और कमजोर देश होकर हमने तब नैतिक शक्ति पर अधिक जोर दिया। नेहरू की अपेक्षा थी कि सदाचार और उदारता से बेहतर विश्व का निर्माण होगा। उस समय की परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में गुटनिरपेक्षता गलत नीति नहीं थी, परंतु नेहरू ने अंतरराष्ट्रीय तंत्र में निहित शक्ति-राजनीति को ठीक से भांपा नहीं। पाकिस्तानी हमलावरों ने 1947-48 में जब जम्मू-कश्मीर के एक तिहाई भाग पर जबरन कब्जा कर लिया तो संयुक्त राष्ट्र में याचिका दाखिल करना और फिर उसकी अनुशंसा पर एकपक्षीय युद्धविराम घोषित करना अति आदर्शवाद या भोलापन था। तत्कालीन उप-प्रधानमंत्री सरदार पटेल नेहरू की इस नादानी से नाखुश थे। अगर पटेल के हाथों में विदेश नीति होती तो आज हमें गुलाम कश्मीर और सीमापार आतंकवाद परेशान नहीं कर रहे होते। पटेल के निधन के पश्चात अव्यावहारिक नीति पर आपत्ति जताने वाले नेता सरकार में रहे ही नहीं। लिहाजा नेहरू ने च्हिमालय की भूलज् 1962 में फिर दोहराई, जब चीन ने जम्मू-कश्मीर के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र पर आक्रमण करके 43,000 वर्ग किमी क्षेत्र हथिया लिया। इस प्रकार विकासशील देशों में आपसी भाईचारे की उम्मीद पर चीन ने पानी फेरा और अपनी सैन्य श्रेष्ठता के बलबूते च्जिसकी लाठी उसी की भैंसज् का उदाहरण पेश किया। चीन के हाथों मिले अपमान के बाद भारत ने भू-राजनीतिक वास्तविकता को समझा और धीरे-धीरे सैन्यबल में वृद्धि करने लगा। शीतयुद्ध के दौर में गुटनिरपेक्षता को त्यागा तो नहीं गया, पर तत्कालीन महाशक्ति च्सोवियत संघज् के निकट जाकर इंदिरा गांधी ने 1971 में बांग्लादेश आजाद कराया और देश के दोनों छोरों पर पाकिस्तान के खतरे को दुर्बल किया। 1974 में हमने पहला परमाणु परीक्षण कर यथार्थवादी रुख का परिचय दिया, लेकिन विदेश नीति तभी रंग लाती है जब देश आर्थिक रूप से सक्षम बने और अन्य देशों की सुरक्षा और विकास की खातिर खर्च करने के लिए वित्तीय साधन जुटाए। इंदिरा गांधी के युग में भारत ने समाजवादी आर्थिक नियंत्रण और लालफीताशाही से उद्यम, प्रौद्योगिकी और विदेश व्यापार के विकास पर जो अंकुश लगाया, उससे भारी क्षति हुई। उधर 1980 से आर्थिक सुधारों के कारण चीन भारत से कई गुना अधिक शक्तिशाली हो गया। हम आज तक इस अंतर को घटा नहीं पाए हैं। 21वीं सदी में कूटनीति में सफलता पाने के लिए चार तत्वों का मिश्रण आवश्यक है-सैन्य शक्ति, सामरिक साझेदारियां, निरंतर आर्थिक वृद्धि और साफ्ट पावर को बढ़ावा देती नीति। इस लिहाज से भारत ने कुछ उपलब्धियां हासिल की हैं, पर इसमें उल्लेखनीय बदलाव तब आया जब मोदी सरकार ने अमेरिका के साथ सामरिक संबंधों में बेझिझक छलांग लगाई। इससे भारत गुटनिरपेक्षता के चंगुल से निकला और सामरिक तौर पर विश्व पटल पर खिलाड़ी बनने का दावा करने लगा। चाणक्य, कामंदक और शुक्राचार्य जैसे प्राचीन रणनीतिकारों की विरासत को पुनर्जीवित किया गया, जिसे हमने गुलामी की लंबी अवधि और स्वाधीनता के बाद कई दशकों तक भुला दिया था। वर्तमान विदेश मंत्री एस. जयशंकर के अनुसार च्इंडिया अब भारत बन रहा है।ज् इस वजह से भारत बाहरी शत्रुओं के साथ दृढ़ता से पेश आ रहा है। आज चीनी तानाशाही के मंसूबे भयावह हो गए हैं। इसे देखते हुए पश्चिम और पूर्व के कई देश चाहते हैं कि भारत लोकतांत्रिक महाशक्ति बने। जून 2020 में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की अस्थायी सदस्यता के चुनाव में भारत ने 192 देशों में से सर्वाधिक 184 मत प्राप्त करके सिद्ध किया कि आज हमारी जो साख है, वह विकासशील देशों में अव्वल है। सामरिक लचीलापन, छोटे बहुपक्षीय गठबंधन, मुक्त व्यापार संधियां, भारतीय संस्कृति और आधुनिकीकरण का दुनिया के कोने-कोने तक प्रचार की रणनीति से ही आने वाले दशकों में भारत महाशक्ति बन सकता है। अगले 25 साल देश के उत्थान में सबसे महत्वपूर्ण होंगे। विदेश नीति के मामले में अब से 2047 तक हम ठान लें कि विश्व की वास्तविक सच्चाइयों और चुनौतियों का सामना परिपक्व राज्य की भावना से करेंगे, सामरिक अवसर नहीं खोएंगे और उस क्षितिज तक भारत को ले जाएंगे, जहां आने वाली पीढ़ियों को गर्व हो कि आजाद भारत ने सचमुच विश्व व्यवस्था को बनाने में उत्कृष्ट योगदान दिया। **-आनंद किशोर शर्मा**

> **बीते 75 वर्षों में लोकतंत्र, संघीय ढांचे, सामाजिक अवस्था, आर्थिक स्थिति और सांस्कृतिक परिवेश के साथ-साथ एक महत्वपूर्ण मुद्दा विदेश नीति भी है, जिस पर हमें आत्मनिरीक्षण करना चाहिए।**

शान से लहराएगा तिरंगा...आज हर मन गाएगा जन-गण-मन...

सवाई माधोपुर (स.क्रा.सं.)।

जिला मुख्यालय सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में देश

की आजादी का पर्व स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त को हर्षोल्लास के साथ सोशल डिस्टेंसिंग एवं कोरोना एडवाइजरी की पालना के साथ मनाया जाएगा। इस 75वें स्वतंत्रता दिवस का जिला स्तरीय समारोह पुलिस लाइन परेड ग्राउंड पर आयोजित किया जाएगा। अतिरिक्त जिला कलेक्टर डॉ. सूरज सिंह नेगी ने बताया कि जिला स्तरीय समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उद्योग एवं राजकीय उपक्रम तथा जिला प्रभारी मंत्री परसादी लाल मीना द्वारा सुबह 9 बजे ध्वजारोहण किया जाएगा।

इस अवसर पर पुलिस बैंड द्वारा राष्ट्रगान प्रस्तुत किया जाएगा। मुख्य अतिथि द्वारा राजस्थान पुलिस, आरएसी, होमगार्ड्स की टुकड़ियों की परेड का निरीक्षण कर मार्च पास्ट की सलामी ली जाएगी।राज्यपाल के संदेश का होगा पठनइस अवसर पर अतिरिक्त जिला कलेक्टर डॉ. सूरज सिंह नेगी द्वारा राज्यपाल के संदेश का पठन किया जाएगा। जिला स्तर पर जिले की 32 प्रतिभाओं एवं श्रेष्ठ कार्य करने वालों को योग्यता प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया जाएगा। कार्यक्रम में वीरांगनाओं का सम्मान भी किया जाएगा। स्वतंत्रता दिवस समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुतियां भी दी जाएगी। स्वतंत्रता दिवस समारोह के कार्यक्रम में मास्क लगाकर आना अनिवार्य होगा तथा थर्मल स्क्रीनिंग के बाद ही प्रवेश दिया जाएगा। जिला स्तरीय समारोह से पूर्व जिला कलेक्टर राजेन्द्र किशन 8ः15 बजे कलेक्टर निवास पर एवं 8ः30 बजे कलेक्ट्रेट पर ध्वजारोहण करेंगे।

जिले में उपखंड स्तरीय कार्यक्रम यहां होंगे बौंली के राउमावि में सुबह 9ः15 बजे एसडीएम बद्रीनारायण मीना ध्वजारोहण करेंगे। मलारना डूंगर राउमावि में उपखंड स्तरीय समारोह एसडीएम के मुख्य आतिथ्य में सुबह 8ः30 बजे।>चौथ का बरवाड़ा में मुख्य समारोह सुबह 9ः00 बजे राउमावि में मनाया जाएगा। उपखंड अधिकारी देवी सिंह ध्वजारोहण करेंगे।> राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बालेर में मुख्य समारोह का आयोजन होगा।

शादी के लिए प्रेमिका के पति की हत्या

जयपुर में 7 साल पहले जिससे लव मैरिज की, उसी के आशिक ने सिर में मारी गोली; देर रात घर में घुसकर किया हमला

निराला समाज, जयपुर।

जयपुर जिले के कोटपूतली में घर में सो रहे युवक की गोली मारकर हत्या कर दी गई। दो लोग रात एक बजे घर में घुसे। पहले उसकी पिटाई की, फिर सिर में गोली मारकर भाग गए। बताया गया है कि हमलावरों में से एक युवक की पत्नी से शादी करना चाहता था।

कोटपूतली के खडब गांव का रहने वाला भोलाराम गुर्जर (30) ट्रक ड्राइवर था। सात साल पहले उसने लव मैरिज की थी। तीन साल से वह सेमाला में अमाई कॉलोनी के पास मकान बनाकर मां, पत्नी और दो बेटों के साथ रहता था। शुक्रवार रात को वह खाना खाकर बाहर वाले कमरे में सो गया। दूसरे कमरे में पत्नी व दोनों बेटे सो रहे थे। मां भी तीसरे कमरे में अकेली सो रही थी। रात को करीब एक बजे दो लोग घर में घुस आए। दोनों ने भोलाराम की पिटाई की और पिस्टल निकालकर सिर पर फायर कर दिया। भोलाराम वहीं पर अचेत हो गिर पड़ा।

तेज धमाके की आवाज सुनकर दौड़ी मां और पत्नी

फायरिंग होने पर तेज धमाके की आवाज सुनकर मां, पत्नी व दोनों बच्चे कमरे से निकल कर आए। दोनों बदमाश बाइक लेकर फरार हो गए। मां और पत्नी चीख पुकार करने लगी। मृतक की मां ने गोली चलाने वाले एक आरोपी नवीन जाट को पहचान लिया। फायरिंग की आवाज सुनकर पड़ोस के लोग घरों से निकल कर आए। भोलाराम लहूलुहान पड़ा हुआ है। मां और पत्नी पास में बैठी रो रही थी। पड़ोसियों ने पुलिस को सूचना दी। भोलाराम को अस्पताल में पहुंचाया। जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया।

आरोपी के युवक की पत्नी से संबंध

भोलाराम गुर्जर की गांव के ही नवीन जाट से कुछ दिनों से अनबन चल रही थी। वह अक्सर घर पर भी आता था। भोला की पत्नी से उसके संबंध हैं। सूत्रों की मानें तो नवीन जाट भोलाराम की पत्नी से प्रेम करता है। दोनों के बीच संबंध भी हैं। नवीन ने भोला की पत्नी से शादी करने के लिए ही उसको गोली मार दी।

फोरेंसिक टीम और डॉग स्क्वाड को बुलाया

एएसपी कोटपूतली सहित पुलिस बल मौके पर पहुंचा। जांच के लिए फोरेंसिक साइंस लैब (स्वस्रु) टीम बुलाई गई। डॉग स्क्वाड टीम को भी बुलाया गया। पुलिस मामले की जांच कर रही है। पड़ोसियों से भी पूछताछ जारी है।

सेंट्रल विस्टा की खूबसूरती बढ़ाएगा जैसलमेर का लखा ग्रेनाइट

देश का सबसे महंगा लाल ग्रेनाइट, सिंदूरी सबसे बड़ी खूबी, 10 लाख वर्ग फीट स्टोन से बनेंगे फर्श और फुटपाथ

निराला समाज, जैसलमेर। दिल्ली में बन रहे सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट की खूबसूरती जैसलमेर का लखा ग्रेनाइट बढ़ाएगा। इस प्रोजेक्ट में करीब 10 लाख स्क्वायर फीट लाल यानि लखा ग्रेनाइट लगाया जाएगा। पिछले दो महीने से इसकी सप्लाई शुरू हो चुकी है और अब तक 60 हजार क्यूबिक मीटर ग्रेनाइट दिल्ली सप्लाई भी हो चुका है। जैसलमेर और बाड़मेर जिलों की सीमा पर पाए जाने वाले इस लाल ग्रेनाइट का उपयोग सेंट्रल विस्टा में फर्श, पैदल मार्ग और कॉलम के निर्माण में किया जाएगा। जैसलमेर से 120 किलोमीटर दूर लखा गांव से देश का एकमात्र लाल ग्रेनाइट निकलता है। ऐसा दावा किया जाता है कि यह देश का सबसे महंगा ग्रेनाइट है, जिसकी कीमत करीब 450 रुपए स्क्वायर फीट है। हर महीने डेढ़ लाख स्क्वायर फीट स्टोन वहां सप्लाई होगा। 4 महीने में 10 लाख स्क्वायर फीट ग्रेनाइट प्रोजेक्ट के लिए पहुंचाने का टारगेट रखा गया है। इसके लिए पिछले दो महीने से सोर्सिंग भी चल रही है।

नेशनल वार मेमोरियल दिल्ली में भी लगा लखा ग्रेनाइट

2019 में इंडिया गेट के पास 40 एकड़ में बने नेशनल वार मेमोरियल में सबसे ज्यादा लखा ग्रेनाइट का उपयोग किया गया। युद्ध स्मारक को देश को समर्पित करते वक्त प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व तत्कालीन रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण मौजूद थी। उस वक्त इस लाल पत्थर की खूबसूरती ने उन्हें प्रभावित किया था। लखा में ग्रेनाइट की माइंस चला रहे शोकत अली बताते हैं कि दिल्ली में बने युद्ध स्मारक में इसी लाल ग्रेनाइट का इस्तेमाल किया गया है।

यह है इसकी खूबी, सिंदूरी और खून जैसा लाल रंग इसकी पहचान

ये लाल ग्रेनाइट अपनी अनूठी लाल छाया के लिए प्रतिष्ठित है। इसकी एक चिकनी बनावट है और लाल रंग पर बहुरंगी माइक्रोपार्टिकल्स की तरंगें इस पत्थर को बहुत ही आकर्षक बनाती हैं। इसकी खूबसूरती इसके रंग में हैं। सिंदूरी और खून जैसा लाल रंग इसकी सबसे बड़ी पहचान है और इसी रंग की वजह से यह प्रसिद्ध है।

लखा गांव के नाम से हुआ लखा ग्रेनाइट

इसे लखा ग्रेनाइट इसलिए भी कहते हैं क्योंकि यह जैसलमेर से करीब 120 किलोमीटर दूर फतेहगढ़ तहसील के लखा गांव में निकलता है। ऐसा दावा किया जाता है कि ऐसे रंग का अनूठा ग्रेनाइट दुनिया में और कहीं नहीं मिलता है।

5 साल से मंदी की मार झेल रहे,अब खिले चेहरे

खदान मालिक मुकद्दर मेहर ने बताया कि नोटबंदी व जीएसटी का काफी कुछ असर लखा के खदान मालिकों पर भी पड़ा था और रही सही कसर कोरोना ने निकाल दी थी। इस वजह से 65 में से सिर्फ 20 ही काम कर पा रही है। सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट से इनकी डिमांड बढ़ गई है। इसे कई देशों में भी निर्यात किया जाता है। यहां 1990 में खनन की शुरूआत हुई थी। खदान मालिक कमल सिंह ने बताया कि लाल रंग का ग्रेनाइट दुनिया में कहीं और उपलब्ध नहीं है। भारत के अलावा अरब देश, तुर्किस्तान, चीन और इस्तांबुल समेत अन्य देशों में इसकी सबसे ज्यादा डिमांड है।

साइंस में रिसर्च व डवलपमेंट जरूरी

जयपुर (कासं)। एलन इंस्टीटयूट के हेड आशीष अरोड़ा ने शुक्रवार को बच्चों को साइंस के मुश्किल सवालों को हल करने का फॉर्मूला सिखाया। जयपुर के रोनित जैन के सवाल पर जवाब देते हुए कहा कि साइंस में लॉजिक और कारण होते है। जिसकी एक प्रक्रिया होती है। आज देश में हम जो टेक्नोलॉजी हम देख रहे हैं वे सभी साइंस है, जिसे विकसित करने में समय लगा है। कई शोध के बाद यह संभव हो सका है। वहीं विज्ञान के कई विषय याद ना होने पर जब बच्चों ने सवाल किया तो अरोड़ा ने बताया कि साइंस में कोई भी चीज रटी नहीं जाती, उसे समझा जाता है। हम जितना समझेंगे, उतनी जल्दी अविष्कार कर पाएंगे। जिसके लिए हमें लिखने की आदत डालनी चाहिए। ताकि हमारा दिमाग उस विषय को समझने की स्थिति में आ सकें। दरअसल यह बात उन्होंने फ्यूचर सोसायटी, एलआईसी और आईडीबीआई बैंक की ओर से आयोजित किए जा रहे डिजिटल बाल मेले में बच्चों से संवाद के दौरान कही।

सेशन में दिल्ली की शानम अख्तर ने उनसे बच्चों के लगातार पढ़ाई में बिजी होने के कारण को-करिकुलम एक्टिविटीज न करने पर सवाल किया। जिसके जवाब में आशीष अरोड़ा ने बच्चों को टाइम मैनेजमेंट रखने की सलाह दी। ताकि बच्चे अपनी पढ़ाई और जीवन के जरूरी काम को समय पर पूरा कर सकें। संवाद में एलन हेड ने बच्चों की करियर काउंसलिंग भी की। पलक ने कहा कि जीवन में क्या बनें? इस पर जवाब देते हुए कहा कि सबसे पहले दूसरों की मदद करने के लिए अपने आपको काबिल व्यक्ति बनाएं। इसके बाद डॉक्टर, इंजीनियर, समाजसेवक, राजनेता जो भी बनना है उसके बारे में ध्यान दें। अरोड़ा ने बच्चों को पढ़ाई करते रहने की सलाह दी कोई भी बहाना बनाकर बच्चे अपनी शिक्षा से समझौता ना करें।

एलएलबी और विधि डिप्लोमा परीक्षा के आवेदन 16 तक

जयपुर (कासं)। राजस्थान विश्वविद्यालय ने अपने संघटक विधि महाविद्यालय में अध्ययनरत एलएलबी फर्स्ट, सैकेंड और थर्ड ईयर, पीजी डिप्लोमा इन लेबर लॉ, टेक्सेशन, क्रिमिनोलॉजी, एन्वायरमेंटल लॉ कोर्सेज के नियमित विद्यार्थियों को परीक्षा आवेदन करने के लिए 16 अगस्त तक आवेदन कर सकेंगे। इसके साथ ही विश्वविद्यालय प्रशासन ने पूर्व में सम्बद्ध रहे जयपुर,सीकर, झुंझुनूं, अलवर, भरतपुर, धौलपुर, दौसा जिलों में सभी विधि महाविद्यालयों की एलएलबी फर्स्ट, सैकेंड और थर्ड ईयर मुख्य और ड्यू पेपर परीक्षा 2021 के छात्र भी परीक्षा 2021 के परीक्षा आवेदन करने के लिए 16 अगस्त तक आवेदन कर सकेंगे।

संदीप ने बनाया रिकॉर्ड

जयपुर (कासं)। वैशाली नगर स्थित चित्रकूट सेक्टर तीन निवासी संदीप सारस्वत ने लगातार 1 लाख 22 हजार 217 कदम चलने का रिकॉर्ड बनाया है। इससे पहले जुलाई में केरल के एक युवक सचिन सोमन ने 1.11 लाख कदम चलने का रिकॉर्ड बनाया था। उन्हें यह रिकॉर्ड बनाने में 18 घंटे का का समय लगा था। सारस्वत ने बताया कि बुधवार दोपहर को उन्होंने चलना शुरू किया था और उसके बाद गुरुवार रात आठ बजे लगातार चल कर यह रिकार्ड बनाया। इसमें उन्हें 19 घंटे 35 मिनट का समय लगा। इसकी गणना वॉकिंग एप के माध्यम से की गई। जिसमें समय, किमी और कदम की जानकारी बताई जाती है। केरल के सचिन सोमन के बाद यह सबसे अधिक वॉकिंग का रिकॉर्ड है। संदीप एनिमल न्यूट्रीशन के काम से जुड़े हैं वह प्रतिदिन पार्क मे पांच से छह घंटे तक चलते हैं।

इनोवेशन और स्टार्ट अप के जाने आयाम

जयपुर (कासं)। स्वामी केशवानंद इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में कॉलेज की इनक्यूबेशन और एंटरप्रेन्योरशिप डवलपमेंट सैल की ओर से आइडियाए इनोवेशन, इनक्यूबेशन एंड एंटरप्रेन्योरशिप 2021 पर तीन दिवसीय नेशनल वर्कशॉप की शुरुआत हुई। वर्कशॉप मे देशभर से 500 से अधिक स्टूडेंट्स ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एमएसएमई निदेशक वीके शर्मा ने छात्रों को आइडिया जनरेशन, फंडिंग के अवसरों के बारे में बताया और उनसे वर्चुअल प्रेजेंटेशन पर फोकस करने को कहा। कॉन्फ्रेंस में विशिष्ट अतिथि सुधीर गुप्ता ने स्वामी विवेकानंद के हवाले से अपना भाषण दिया। उन्होंने भारत में स्टार्टअप के लिए सीड फंडिंग योजनाओं के बारे में चर्चा की। उन्होंने छात्रों को तेजी से बदलती दुनिया के लिए खुद को तैयार करने के लिए प्रोत्साहित किया। कॉन्फ्रेंस में प्रमुख वक्ता पीएम भारद्वाज के साथ कार्यक्रम का संचालन प्रियंका शर्मा और इशिता व्यास ने किया। इस मौके पर कॉलेज के निदेशक जयपाल मील ने स्टूडेंट्स को उद्यमिता और स्टार्टअप को करियर विकल्प के रूप में लेना की आवश्यकता बताई। उन्होंने संस्थान में इस तरह के आयोजन करने के लिए टीम की सराहना की।

बागियों ने बढ़ाई कांग्रेस की टेंशन, मनाने में जुटे नेता

पंचायत चुनाव में नाम वापसी आज

कांग्रेस नेताओं का दावा, बागियों को मनाने में होंगे कामयाब

बागियों के मैदान में डटे रहने से कांग्रेस प्रत्याशियों को होगा नुकसान

जयपुर (कासं)।

प्रदेश के 6 जिलों में हो रहे पंचायत-जिला परिषद चुनाव के लिए में नाम वापसी बुधवार को होंगे। दोपहर 3 बजे तक प्रत्याशी नाम वापस ले सकेंगे।

उसके बाद शाम पांच बजे चुनाव मैदान में डटे प्रत्याशियों की फाइनल सूची जारी की जाएगी। इसी बीच टिकट नहीं मिलने से नाराज होकर बागी चुनाव मैदान में कूदे प्रत्याशियों ने कांग्रेस की टेंशन बढ़ा दी है।

नामांकन भरने के साथ ही विधायकों और पार्टी के अन्य नेता बागियों से संपर्क कर उन्हें मनाने में जुटे हैं। हालांकि कांग्रेस नेताओं का दावा है कि नाम वापसी का समय बीतने से पहले वह अपने बागियों को बनाने में कामयाब हो जाएंगे, लेकिन अगर पार्टी नेता बागियों को मनाने में कामयाब नहीं हो पाते तो फिर कांग्रेस प्रत्याशियों को बागियों से कड़ी टक्कर मिलने के साथ ही नुकसान भी उठाना पड़ सकता है।

पीसीसी नेता भी संपर्क में

वहीं दूसरी ओर बागियों को मनाने में विधायकों के साथ-साथ प्रदेश कांग्रेस कंट्रोल रूम में तैनात नेता भी लगातार संपर्क कर नाम वापसी की अपील कर रहे हैं। इसके साथ ही कांग्रेस प्रत्याशी के समर्थन में प्रचार की अपील भी कर रहे हैं।

संगठन और राजनीतिक नियुक्तियों का लालच भी

इधर, बागी प्रत्याशियों को राजनीतिक नियुक्तियों, मनोनीत पार्षद बनाने और संगठन में अहमियत देने का लालच भी दिया जा रहा है, जिससे बागी प्रत्याशी नामांकन वापस लेले।

बागियों का बोलबाला

दरअसल सबसे ज्यादा बगावत बसपा से कांग्रेस में आए विधायकों और निर्दलीय विधायकों के क्षेत्र में हैं, जहां टिकट नहीं मिलने से नाराज होकर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने बगावत का झंडा उठा लिया है। कांग्रेस के टिकट पर विधानसभा चुनाव हारे नेताओं ने समर्थकों को बागी प्रत्याशियों के तौर पर चुनाव मैदान में उतारा। ऐसे में यहां कांग्रेस प्रत्याशियों को नुकसान उठाना पड़ सकता है। गौरतलब है कि बगावत के डर से प्रदेश कांग्रेस के प्रत्याशियों की सूची सार्वजनिक नहीं की थी और फोन से ही सूचना देकर प्रत्याशियों को नामांकन भरने को कहा गया था।

भाजपा ने 80 से ज्यादा पंचायत समितियों में नहीं उतारे प्रत्याशी

जयपुर (कासं)। पंचायत चुनाव के पहले चरण के लिए नामांकन के बाद अब तस्वीर साफ हो रही है। भाजपा ने जिला परिषदों में 1 वार्ड और पंचायत समितियों में करीब 80 वार्डों में अपने सिंबल पर प्रत्याशी नहीं उतारे। पार्टी इसे अपनी रणनीति का हिस्सा बता रही है। मगर वजह अंदरूनी कलह को माना जा रहा है। यही वजह है कि टिकट नहीं मिलने से नाराज जिन कार्यकर्ताओं ने निर्दलीय ही चुनाव मैदान में ताल ठोक दी। हालांकि पार्टी उनकी मान-मनौव्वल में जुट गई है। आंकड़ों पर नजर डाली जाए तो भरतपुर ऐसा जिला है, जहां सर्वाधिक वार्डों में प्रत्याशी नहीं उतारे गए। यहां पार्टी की रणनीति है कि सिंबल के बिना उतरे प्रत्याशी को समर्थन देंगे। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनियां ने भी भरतपुर क्षेत्र में सियासी समीकरणों के आधार पर कुछ सीटों पर प्रत्याशी नहीं उतारे जाने की बात कही।

200 में से 199 में उतारे प्रत्याशी

प्रदेश समन्वयक और बीजेपी प्रदेश मंत्री जितेंद्र गोठवाल ने बताया कि प्रदेश के 6 जिला परिषदों में कुल 200 वार्ड हैं, जिनमें से 199 वार्डों में भाजपा ने अपने सिंबल पर प्रत्याशी उतारे हैं। जबकि भरतपुर जिला परिषद के सिर्फ 1 वार्ड में भाजपा ने अपने सिंबल पर कोई प्रत्याशी नहीं उतारा। इसी तरह इन 6 जिलों की कुल 78 पंचायत समितियों में 1564 वार्ड आते हैं। भाजपा ने 80 वार्डों में अपने प्रत्याशी नहीं उतारे। भाजपा इन वार्डों में स्थानीय समीकरणों के आधार पर कुछ निर्दलीयों को समर्थन देगी, जो पार्टी की विचारधारा से जुड़े हैं।

पहले समझाइश, फिर चलेगा अनुशासन का डंडा

भाजपा के कई कार्यकर्ताओं ने अपनी ही पार्टी के प्रत्याशियों के खिलाफ ताल ठोकी है। पार्टी स्थानीय इकाईयों के जरिए इनको मनानें में जुटी है। अगर ये नहीं मानें तो इनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी।

11 विद्यार्थियों का हुआ सम्मान

जयपुर (कासं)। मुरलीपुरा स्थित एनके पब्लिक स्कूल में सैकेंडरी और सीनियर सैकेंडरी परीक्षा में शत प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले स्कूल के 11 विद्यार्थियों का सम्मान किया गया। इनमें 12वीं कक्षा की छात्रा शीला जाट, अनुष्का शर्मा, निष्ठा गुप्ता, छात्र प्रांजल वशिष्ठ, राजेंद्र चौधरी, सचिन प्रजापत और 10वीं कक्षा के छात्र आकाश बंसल, अजय सिंह, राहुल महर्षि, छात्रा आयुषी शर्मा, अक्षिता शामिल है। इस अवसर पर निदेशक कुलदीप सिंह, सलाहकार वीएन त्रिवेदी, समन्वयक नाहिदा खान, प्रधानाचार्य निरूपमा अग्निहोत्री आदि भी उपस्थित थे।

'मिसेज राजस्थान' का पोस्टर लॉन्च

जयपुर (कासं)। फ्यूजन गुप ने अपने ब्यूटी पेजेंट 'मिसेज राजस्थान 2021' का ऑफिशियल अनाउंसमेंट किया। इस अवसर पर पीजेंट का पोस्टर लॉन्च किया गया, जिसमें मिसेज राजस्थान 2020 लवलीन डागर, जेडी माहेश्वरी, देवेंद्र झावर, अमित चांडक, वासु जैन, रश्मी चौहान, मिसेज इंडिया नित्या सिंह तंवर इत्यादि शामिल हुए। आयोजक योगेश मिश्रा और निमिषा मिश्रा ने बताया कि घर में बैठी महिलाओं के जो अधूरे सपने रह गए हैं, उन सपनों को नई उड़ान देने के लिए यह आयोजन किया जाता है। सह आयोजक हरीश सोनी ने बताया ऑडिशन से 16 फाइनलिस्ट शॉर्टलिस्ट हुई है। इसका 20 अगस्त को होगा।

चरक जयंती पर चिकित्सा शिविर

जयपुर (कासं)। चरक जयंती पर शुक्रवार को कई जगह निःशुल्क चिकित्सा शिविर आयोजित किए गए। जाहोता के राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में शुक्रवार को आयुर्वेद चिकित्सा शिविर आयोजित किया, जिसका 108 मरीजों ने लाभ उठाया।

तेंदुए से भिड़ गया कुत्ता

निराला समाज, उदयपुर। उदयपुर में पहाड़ी इलाकों से सटे गांवों में तेंदुए का आतंक जारी है। शहर से कुछ दूर लखावली गांव में

शुक्रवार रात घर के बाहर तेंदुए ने एक कुत्ते को अपना शिकार बनाने की कोशिश की। कुत्ते ने भी अपनी जान बचाने के लिए तेंदुए का डटकर मुकाबला किया। आखिर तेंदुए को बिना शिकार के ही जंगल में भागना पड़ा। इधर, इन दोनों की लड़ाई का वीडियो भी सामने आया, जो मकान मालिक मोहन मेघवाल ने मोबाइल में लिया था। मकान मालिक मोहन मेघवाल ने बताया, %लखावली में गुरुवार देर रात अचानक एक तेंदुआ उसके घर के बाहर आ पहुंचा। तेंदुए ने वहां बैठे कुत्ते पर हमला किया। चिल्लाने की आवाज आई तो मैंने खिड़की से बाहर झांककर देखा तो पता चला कि तेंदुआ कुत्ते पर हमला कर रहा है और वह अपनी जान बचाने के लिए उससे भिड़ गया। मोहन ने बताया कि दोनों के बीच करीब 2 से 3 मिनट तक यह संघर्ष चलता रहा। इस दौरान मैंने इसका वीडियो अपने मोबाइल में कैद कर लिया। जब मैं जोर से चिल्लाया तो तेंदुआ जंगल की तरफ भाग गया। DCF बालाजी करी ने बताया कि विभाग को तेंदुए के हमले की जानकारी नहीं मिली है। यदि जरूरत होगी तो मौके पर निरीक्षण के बाद इस बारे में निर्णय लिया जाएगा। जंगलों के पास आवारा पशु तेंदुए के लिए मुख्य शिकार होते हैं। वहीं, पूर्व CCF और वन्य विशेषज्ञ राहुल भटनागर बताते हैं कि तेंदुआ बेहद शर्मीला और डरपोक किस्म का जीव है। पहाडों में तेंदुआ बकरी, भेड और कुत्तों को अपना निवाला बनाता है। आमतौर पर तेंदुआ इंसानों पर हमला नहीं करता। भटनागर ने बताया कि कुत्ते के शिकार के पीछे इसे तेंदुए की स्वीट डिश माना जा सकता है।

बकाया भुगतान नहीं मिला तो रक्षाबंधन पर ऐच्छिक अवकाश पर रहेंगे जेसीटीएसएल कर्मचारी

जयपुर (कासं)। जयपुर में संचालित लो-फ्लोर बसों के कर्मचारियों को पिछले ढाई महीनों से वेतन नहीं मिला है। यही नहीं कर्मचारी पिछले कई सालों एक ही वेतन पर काम कर रहे हैं। इन मांगों को लेकर कर्मचारियों ने रक्षाबंधन पर 22 अगस्त को ऐच्छिक अवकाश पर जाने की घोषणा की है। जेसीटीएसएल एम्प्लाईज यूनियन के पदाधिकारियों सहित कर्मचारियों ने मंगलवार को जेसीटीएसएल मुख्यालय जाकर जेसीटीएसएल प्रबंधन को ज्ञापन सौंपा और वार्ता की। जिसमें प्रबंधन की ओर से रक्षाबंधन से पहले दो माह के वेतन का एकमुश्त भुगतान करने का आश्वासन मिला तथा अन्य मांगों का भी सकारात्मक समाधान जल्द किए जाने का आश्वासन दिया। यूनियन के महासचिव चंद्रप्रकाश धाकड़ कहा कि हमने भी निर्णय किया है कि यदि रक्षाबंधन से पहले बकाया वेतन का भुगतान एकमुश्त नहीं किया गया और पिछले 8 साल से प्रोबेशन में कार्य कर रहे कर्मचारियों को नियमित नहीं किया गया तो 22 अगस्त रक्षाबंधन को सभी कर्मचारी एक दिन के ऐच्छिक अवकाश पर रहेंगे।

आम सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरी पत्नी रजनी के नाम से एक कार व एक मोटरसाइकिल पंजीकृत है। कार का रजिस्ट्रेशन नम्बर RJ 01 CB 9511 तथा मोटरसाईकिल का रजिस्ट्रेशन नम्बर RJ 25 SD 4725 है। मेरी पत्नी का स्वर्गवास हो चुका है। अब मैं इन दोनों वाहन कार व मोटरसाइकिल को अपने नाम हस्तान्तरण करवाना चाहता हूँ। अतः किसी को आपत्ति हो तो सात दिवस में जिला परिवहन अधिकारी, करौली को सूचित करें।

अमृतलाल मीना पुत्र श्री जोरया
मीणा, रानेठा, तहसील-
सपोटरा, जिला- करौली

भारत फिर से अखंड होगा ही क्योंकि यही भारत की नियति भी है

अखंड भारत का स्वप्न कुछ लोगों को असंभव लगता हो। लेकिन यदि हम इतिहास का अवलोकन करेंगे, तो ध्यान आएगा कभी जो बातें असंभव लगा करती थीं, कुछ समय के पश्चात वो संभव भी हुआ है। मनुष्य की उम्र कुछ वर्ष हुआ करती है पर देशों की उम्र हजारों-हजारों वर्ष होती है।

मैं रहूं या न रहूं, यह देश रहना चाहिए यह पंक्ति प्रत्येक राष्ट्रभक्त भारतवासी का मनोभाव है। इस भाव को चरितार्थ करने के लिए न जाने कितनी ही पीढ़ियों ने अपने आपको इस मातृभूमि पर न्यौछावर कर दिया। अखंड भारत हमारे लिए केवल शब्द नहीं है। यह हमारी श्रद्धा, भाव, देशभक्ति व संकल्पों का अनवरत प्रयास है जिसे प्रत्येक देशभक्त जीवंत महसूस करता है। हम इस भूमि को माँ मानते हैं और पुत्रवत इस भूमि की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। हम कहते भी हैं माताभूमि॰ पुत्रोहंपृथिव्या॰। इसलिए माँ का प्रत्येक कष्ट हमारा अपना कष्ट है और एक माँ खंडित रहे, कष्ट में रहे, यह उसके पुत्र कैसे स्वीकार कर सकते हैं। समय-समय पर भारत खंडित कैसे हुआ, कौन-सी गलतियां हम से हुईं। वो कौन से कारण रहे जिन्होंने इसकी पृष्ठभूमि लिखी इन सबका चिंतन, विभाजन की पीड़ा व पुनः अखंड होने का विश्वास व संकल्प ही इसका एक मात्र हल है। जब भारत की लाखों आँखों में पलने वाला यह अखंड भारत का सपना करोड़ों-करोड़ों हृदयों की धड़कन बन कर धड़कने लगेगा, तभी यह संभव होगा।

असंभव में छिपा है संभव शब्द

अखंड भारत का स्वप्न कुछ लोगों को असंभव लगता हो। लेकिन यदि हम इतिहास का अवलोकन करेंगे, तो ध्यान आएगा कभी जो बातें असंभव लगा करती थीं, कुछ समय के पश्चात वो संभव भी हुआ है। मनुष्य की उम्र कुछ वर्ष हुआ करती है पर देशों की उम्र हजारों-हजारों वर्ष होती है। विश्व के ऐतिहासिक अनुभव हैं कि किसी भी देश का विभाजन स्थाई अथवा अटल नहीं होता। 1905 का बंग भंग, पुनः 1911 में एक हो गया। 2000 वर्ष पूर्व नष्ट इजराइल, मई 1948 में फिर से स्वतंत्र राष्ट्र बना। 'होली रोमन एम्पायर' शीघ्र नष्ट हो गया। न पवित्र रहा, न रोमन और न एम्पायर। विशाल ब्रिटिश साम्राज्य भी स्थाई न रहा। जर्मनी का विभाजन 1945 में, परन्तु 1989 में पूर्वी जर्मनी व पश्चिम जर्मनी को विभाजित करने वाली बर्लिन की दीवार गिरा दी गई, जर्मनी पुनः एक हो गया। दोनों वियतनाम एक हो गये। सोवियत संघ से 15 मध्य एशियाई देश अलग होकर पुनः स्वतंत्र राष्ट्र बन गये।

संस्कृति ही हमारा मूल

1947 में ही भारत का पहला व आखिरी विभाजन नहीं हुआ। वरिष्ठ पत्रकार देवेंद्र स्वरूप ने बहुत स्पष्ट शब्दों में कहा है कि भारत की सीमाओं का संकुचन 1947 से काफी पहले शुरू हो चुका था। सातवीं से नवीं शताब्दी तक लगभग ढाई सौ साल तक अकेले संघर्ष करके हिन्दू अफगानिस्तान इस्लाम के पेट में समा गया। हिमालय की गोद में बसे नेपाल, भूटान आदि जनपद अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण मुस्लिम विजय से बच गए। अपनी सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा के लिए उन्होंने राजनीतिक स्वतंत्रता का मार्ग अपनाया पर अब वह राजनीतिक स्वतंत्रता संस्कृति पर हावी हो गयी है। श्रीलंका पर पहले पुर्तगाल, फिर हॉलैंड और अंत में अंग्रेजों ने राज किया और उसे भारत से पूरी तरह अलग कर दिया। यद्यपि श्रीलंका की पूरी संस्कृति भारत से गए सिंहली और तमिल समाजों पर आधारित है। दक्षिण पूर्वी एशिया के हिन्दू राज्य क्रमश॰ इस्लाम की गोद में चले गए किन्तु यह आश्चर्य ही है कि भारत से कोई सहारा न मिलने पर भी उन्होंने इस्लामी संस्कृति के सामने आत्मसमर्पण नहीं किया। इस्लामी उपासना पद्धति को अपनाने के बाद भी उन्होंने अपनी संस्कृति को जीवित रखा है और पूरे विश्व के सामने इस्लाम के साथ सह अस्तित्व का एक नमूना पेश किया। किन्तु मुख्य प्रश्न तो भारत के सामने है। तेरह सौ वर्ष से भारत की धरती पर जो वैचारिक संघर्ष चल रहा था उसी की परिणति 1947 के विभाजन में हुई। पाकिस्तानी टेलीविजन पर किसी ने ठीक ही कहा था कि जिस दिन आठवीं शताब्दी में पहले हिन्दू ने इस्लाम को कबूल किया उसी दिन भारत विभाजन के बीज पड़ गए थे। इसे तो स्वीकार करना ही होगा कि भारत का विभाजन हिन्दू-मुस्लिम आधार पर हुआ। पाकिस्तान ने अपने को इस्लामी देश घोषित किया। वहां से सभी हिन्दू-सिखों को बाहर खदेड़ दिया। अब वहां हिन्दू-सिख जनसंख्या लगभग शून्य है।

भारत बोध का अभाव

विभाजन के कारणों की समीक्षा करने पर ध्यान आता है कि तात्कालिक नेतृत्व के मनों में भारत बोध का अभाव व राष्ट्र और भारतीय संस्कृति के बारे में भ्रामक धारणा थी। अंग्रेज अपनी चाल में सफल हुए और उनके द्वारा स्थापित बात कि भारत कभी एक राष्ट्र नहीं रहा और न है बल्कि यह तो अनेक राज्यों का मिश्रण है, उस समय देश के अधिकतर नेता भी इन्हीं बातों में आकर उन्हीं की भाषा बोलने लगे। श्री सुरेंद्र नाथ बनर्जी द्वारा लिखी पुस्तक % हड्डह्लद्बशठ्ठ द्बठ्ठ स्न्ड्डद्वद्बठ्ठद्द% का शीर्षक भी इसी बात की ओर इशारा करता है। अग्रेजों ने उस समय एक और नैरेटिव स्थापित करने का प्रयास किया और उसमें भी उन्हें सफ़लता मिली कि जैसे मुसलमान व वे बाहर से आये हैं वैसे ही आर्य भी बाहर से आये हैं और वही अब हिंदू के नाम से जाने जाते हैं। समय-समय पर देश हित को पीछे छोड़ मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति ने भी विभाजन की बात को ओर हवा देने का काम किया। तुष्टीकरण के नाम पर भारत के मान बिंदुओं से समझौता किया गया। फिर चाहे वो करोड़ों देशवासियों में देशभक्ति के भाव को बढ़ाने वाला गीत 'वंदे मातरम' के विरोध की बात हो, राष्ट्रीय ध्वज के रूप में भगवा रंग व चरखे को न मानने की बात हो, राष्ट्रीय जनसम्पर्क की भाषा के रूप में हिंदी को न स्वीकार करने की बात हो, गोहत्या बंदी की मांग का विरोध हो या फिर अनेक महापुरुषों का महत्व कम किये जाने की बात हो। इन मानबिन्दुओं पर होते आघात के कारण हिन्दुओं की आस्था के केंद्र बिंदु कम होते चले गए व मुस्लिम समाज में भी अलगाव बढ़ता गया। विदेशी आक्रांताओं ने समय-समय पर भारत पर हमले कर हमें पराधीन करने का प्रयास किया। हम पराधीन भी हुए, लेकिन कभी भी हमने पराधीनता स्वीकार नहीं की। हम उसके खिलाफ़ संघर्ष करते रहे। परंतु 1947 में हमारे अपने ही राजनैतिक नेतृत्व ने विभाजन को स्वीकार कर लिया। यह देशवासियों के लिए सबसे दुखद था। अंग्रेज जो स्वतंत्रता हमें जून 1948 तक देने वाले थे। वह 15 अगस्त 1947 को दी जाएगी, ऐसी घोषणा उनके द्वारा 3 जून 1947 को ही कर दी गयी। ताकि कांग्रेस व मुस्लिम लीग को पुन॰ सोचने का मौका न मिल सके और देश में इसके प्रतिरोध में भी वातावरण न बन सके।

भारत का विभाजन स्थायी नहीं

हम सबके सामने प्रश्न यह है कि हम केवल पुरानी बातों का रोना न रोते हुए, आज हम अखंड भारत के लिए क्या कर सकते हैं यह सोचना होगा। यह हमारा व आने वाली पीढ़ियों का दायित्व है कि हम इस अखंड भारत के स्वप्न को पूरा करेंगे। यही दृढ़ संकल्प हमारे आगे के रास्ते को प्रशस्त करेगा। यह कार्य हम ही प्रारंभ करेंगे ऐसा नहीं है, हमारे पूर्वजों ने भी इस कार्य को जारी रखा। इसी कारण आज हम इस अखंड भारत के विषय में अपनी भूमिका के बारे में सोच पा रहे हैं। प्रसिद्ध विद्वानों के निष्कर्षों तथा कथनों से भी ध्यान में आता है कि भारत का विभाजन स्थायी नहीं है। जनरल करियप्पा ने कहा है कि भारत फिर से संगठित (एक) होगा। महर्षि अरविन्द के शब्दों में हम स्थाई विभाजन के निर्णय को स्वीकार नहीं करते। महात्मा गांधी के अनुसार दोनों की सांस्कृतिक एकता तथा दोनों में लचीलापन ही दोनों को एक बनाने का प्रयत्न करेगा। प्रसिद्ध लेखक-वान वाल्बोनवर्ग ने भी कहा था कि भौगोलिक दृष्टि से भारत और पाकिस्तान का विभाजन इतना तर्कहीन है कि आश्चर्य होता है कि यह कितने समय तक चल सकेगा?

भारत की अखंडता का आधार भूगोल से ज्यादा सांस्कृतिक है। अखंड भारत कब होगा यह कहना कठिन है। लेकिन भारत फिर से अखंड होगा ही यह तय है, क्योंकि यही भारत की नियति भी है। और हम सब तो सौभाग्यशाली हैं क्योंकि हमने अपनी आँखों से पिछले कुछ समय में बहुत सी असंभव लगने वाली बातों को संभव होते हुए देखा है। फिर चाहे वो श्रीराम मंदिर निर्माण का विषय हो, धारा 370 की समाप्ति या फिर तीन तलाक का मामला। हम 'याचि देही, याचि डोला' (यानी इन्हीं आँखों से व इसी शरीर से) को मानने वाले लोग हैं। अखंड भारत की आकांक्षा के साथ-साथ हमें अपने लिए कुछ करने वाली बातें भी तय करनी होगी। हमें समाज की कमियों को पहचान कर उसको दूर करने के लिए तत्पर रहना होगा। अपने आप को संगठित रखना होगा। अपने सिद्धांतों को व्यवहार में उतारना व जीवन में उसका प्रकटीकरण दिखे इस और प्रयासरत रहना होगा। देशहित के बारे में सोचने वाले बंधुओं को व समाज की सज्जन शक्ति को साथ लेकर चलना होगा। इन सब करणीय बातों का ध्यान रखते हुए नित्यप्रति अखंड भारत का स्वप्न अपनी आँखों में रखना। मैं अपने इसी जीवन में अखंड भारत को साकार होते हुए देखूंगा, यही प्रबल इच्छाशक्ति हमारे आगे के मार्ग को भी तय करेगी और हम अखंड भारत को साकार होते हुए देखेंगे। ऐसे में जब पूरा देश आज़ादी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर %आज़ादी अमृत महोत्सव% मना रहा है। तो हमारी भूमिका व कर्त्तव्य और अधिक बढ़ जाता है कि हम आज़ादी के इस भाव को अक्षुण्ण रखते हुए, अखंड भारत के स्वप्न को साकार करने के लिए अपनी जिम्मेदारीयों को भी तय करें।

15 अगस्त 1947 के दिन भारत को आजाद करने का क्यों विरोध कर रहे थे ज्योतिषी ?

वैसे तो हर स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री लाल किले से झंडा फहराते हैं। लेकिन 15 अगस्त 1947 को ऐसा नहीं हुआ था। लोकसभा सचिवालय के एक शोध पत्र के मुताबिक देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने 16 अगस्त, 1947 को लाल किले से झंडा फहराया था।

जय हिन्द। आजादी की 75वीं वर्षगाँठ पर पीछे मुड़कर देखें तो स्वतंत्र होने के बाद से देश ने कई चुनौतियों से अवश्य ही बहुत संघर्ष किया लेकिन इसकी बदौलत हम हमारी आने वाली पीढ़ियों का सुनहरा भविष्य सुनिश्चित कर चुके हैं। हमें यह आजादी जिन संघर्षों से मिली उसके बारे में नयी पीढ़ी को बताना तो हमारा दायित्व है ही साथ ही हमें देश की वर्तमान कामयाबियों को हासिल करने के लिए की गयी मेहनत से भी लोगों को रूबरू कराना चाहिए। भारत के सबसे बड़े राष्ट्रीय पर्व पर हर भारतीय की यही कामना है कि हमारा यह प्यारा गणतंत्र स्वस्थ, सुरक्षित और समृद्ध रहे, भारत भूमि का मान-सम्मान दुनिया में बढ़ता रहे, भारत पुनः विश्व गुरु बने, हमारी अर्थव्यवस्था दुनिया में सबसे तेज गति से तरक्की करे, भारतीय और भारतवंशी दुनिया के जिस भी कोने में रहें नेतृत्वकर्ता की भूमिका निभाएँ, जीवन से जुड़े हर क्षेत्र में भारत अभूतपूर्व तरक्की करे और महामारी का प्रकोप इस दुनिया से खत्म हो। आज जब हम आजादी का पर्व मना रहे हैं तो आइए जानते हैं हमारे इस राष्ट्रीय पर्व से जुड़ी कुछ बड़ी बातें-

- भारत की संविधान सभा ने नई दिल्ली स्थित संविधान हॉल में 14 अगस्त को रात्रि 11 बजे अपने पांचवें सत्र की बैठक की। इस सत्र की अध्यक्षता तत्कालीन राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद ने की। इस सत्र में जवाहर लाल नेहरू ने भारत की आजादी की घोषणा करते हुए ट्रिस्ट विद डेस्टिनी यानि नियति से वादा नामक ऐतिहासिक भाषण दिया।
- हर स्वतंत्रता दिवस पर भारतीय प्रधानमंत्री लाल किले से झंडा फहराते हैं। लेकिन 15 अगस्त 1947 को ऐसा नहीं हुआ था। लोकसभा सचिवालय के एक शोध पत्र के मुताबिक देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने 16 अगस्त, 1947 को लाल किले से झंडा फहराया था।
- 15 अगस्त 1947 को जब भारत को आजादी मिली थी तब राष्ट्रपिता महात्मा गांधी इस जश्न में शामिल नहीं हुए थे क्योंकि उस समय वह दिल्ली से हजारों किलोमीटर दूर बंगाल के नोआखली में थे, जहां सांप्रदायिक हिंसा की कई घटनाएं हुई थीं और राष्ट्रपिता उस हिंसा को रोकने के लिए अनशन कर रहे थे।
- 15 अगस्त 1947 तक भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा रेखा का निर्धारण नहीं हुआ था। इसका फ़ैसला 17 अगस्त को रेडक्लिफ लाइन की घोषणा से हुआ था।
- भारत 15 अगस्त को आज़ाद जरूर हो गया, लेकिन उसका अपना कोई राष्ट्र गान नहीं था। हालाँकि रवींद्रनाथ टैगोर जन-गण-मन 1911 में ही लिख चुके थे, लेकिन यह राष्ट्रगान 1950 में ही बन पाया।
- आजादी के समय सैंकड़ों ऐसी रियासतें थीं जिनको इस बात का निर्णय करना था कि उन्हें भारत के साथ जाना है या पाकिस्तान के साथ, बाद में अधिकतर ने भारत के साथ आने का निर्णय किया।
- कभी आपके मन में यह विचार आया है कि क्यों भारत की आजादी के लिए 15 अगस्त की तारीख ही चुनी गई थी? इसका जवाब हम आपको देते हैं। दरअसल ब्रिटिश संसद ने लॉर्ड माउंटबेटन को 30 जून 1948 तक भारत की सत्?ता भारतीयों को हस्तांतरित करने का पूरा अधिकार दे दिया था। लॉर्ड माउंटबेटन को साल 1947 में भारत के आखिरी वायसराय के तौर पर नियुक्त किया गया था और उन्होंने ही भारत की आजादी के लिए 15 अगस्त की तारीख का चयन किया था।
- कुछ इतिहासकारों का यह भी मानना है कि लॉर्ड माउंटबेटन 15 अगस्त की तारीख को शुभ मानता था इसीलिए उसने इस तारीख का चयन भारत की आजादी के लिए किया था। दरअसल 15 अगस्त लॉर्ड माउंटबेटन के लिए इसलिए शुभ था क्योंकि द्वितीय विश्व युद्ध के समय वह संयुक्त सेना का कमांडर था और 15 अगस्त, 1945 को जापानी सेना ने उसके समक्ष आत्मसमर्पण किया था।
- 15 अगस्त को भारत आजाद क्यों किया गया इसके बारे में कुछ इतिहासकारों ने यह भी कहा है कि लॉर्ड माउंटबेटन ने इस तारीख का चयन सी. राजगोपालाचारी के सुझाव पर किया। दरअसल ब्रिटिश सरकार की पहले की योजना के तहत भारत को 30 जून 1948 को आजाद किया जाना था लेकिन जिस तरह भारत में अंग्रेज हुकूमत का विरोध तेज होता जा रहा था उसको देखते हुए सी. राजगोपालाचारी ने लॉर्ड माउंटबेटन से कहा था कि अगर 30 जून 1948 तक इंतजार किया गया तो हस्तांतरित करने के लिए कोई सत्ता नहीं बचेगी। ऐसे में अब लॉर्ड माउंटबेटन ने 15 अगस्त की तारीख भारत की आजादी के लिए चुनी।
- लॉर्ड माउंटबेटन इसलिए भी परेशान था क्योंकि उस समय जिन्ना और नेहरू के बीच देश बंटवारे को लेकर मतभेद खुल कर सामने आ गये थे। जिन्ना ने अलग देश बनाने की मांग कर दी जिसके चलते देश के विभिन्न भागों में साम्प्रदायिक झगड़े शुरू हो गये। इससे पहले कि हालात और बिगड़ते, आजादी 1948 में देने की योजना में बदलाव करते हुए 1947 में ही भारत को आजादी दे दी गयी।
- भारत की आजादी का दिन जब 15 अगस्त तय हो गया तो इसके बाद ब्रिटिश हाउस ऑफ कॉमंस में इंडियन इंडिपेंडेंस बिल 4 जुलाई 1947 को पेश किया गया। इस बिल में भारत के बंटवारे और पाकिस्तान के बनाए जाने का प्रस्ताव रखा गया था। यह बिल 18 जुलाई 1947 को मंजूर हुआ और 14 अगस्त को विभाजन के बाद 15 अगस्त 1947 को मध्यरात्रि 12 बजे भारत की आजादी का ऐलान किया गया।
- क्या आप जानते हैं कि जब लॉर्ड माउंटबेटन ने भारत की आजादी की तारीख 15 अगस्त 1947 तय कर दी तो देश के ज्योतिषियों ने इसका विरोध किया। यह विरोध इसलिए हो रहा था क्योंकि यह शुभ दिन नहीं माना जा रहा था। फटाफट लॉर्ड माउंटबेटन को कुछ और तारीखों का सुझाव दिया गया लेकिन लॉर्ड माउंटबेटन 15 अगस्त की तारीख पर अड़ गये। तब ज्योतिषियों ने एक बीच का रास्ता निकाला और 14 तथा 15 अगस्त की रात 12 बजे का समय तय किया गया। इससे दोनों पक्षों की बात रह गयी। अंग्रेजों के हिसाब से दिन 12॰रू पर शुरू होता है और हिन्दू कैलेंडर के हिसाब से सूर्योदय होने पर नया दिन माना जाता है। इस तरह 15 अगस्त की सुबह भारत के लिए शुभ सवेरा लेकर आई।
- ज्योतिषियों ने भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू को भी कहा था कि वह आजादी मिलने पर अपना ऐतिहासिक भाषण अभिजीत मुहूर्त (11:51 पीएम से 12:39 एमएम) के बीच में ही दें। नेहरू जी ने इसका पालन करते हुए अपना भाषण समय पर समाप्त कर दिया जिसके बाद शंखनाद किया गया।
- 15 अगस्त 1947 को सुबह 8.30 बजे गवर्नमेंट हाउस पर गवर्नर जनरल और मंत्रियों का शपथ समारोह आयोजित किया गया, उसके बाद गवर्नर जनरल को शाही सलाम दिया गया और संवैधानिक सभा में राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया।
- 15 अगस्त 1947 को इंडिया गेट पर झंडा समारोह आयोजित किया गया, आतिशबाजी की गयी और गवर्नमेंट हाउस पर आधिकारिक रात्रि भोज दिया गया।

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र समरानीया में हुआ वैक्सीनेशन

केलवाड़ा (बाराँ) – सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, समरानीया में कोविड वैक्सीनेशन किया गया वैक्सीनेशन रजिस्ट्रेशन प्रभारी पीएचएस सुंदर लाल वर्मा ने बताया कि संस्थान पर 18 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों को कोरोना की पहली व दूसरी डोज लगाई गई।। आज 210 लोगों का कोरोना वैक्सीनेशन किया गया।मेडिकल टीम में पीएचस सुंदर लाल वर्मा, मेल नर्स धर्मेन्द्र गर्ग, जीएनएम आमिर खान, सीएचओ सुनील, एएनएम व अन्य स्टाफ मौजूद रहे।

विश्व हिंदू परिषद व बजरंग दल प्रखंड केलवाड़ा के कार्यकर्ताओं ने मनाया अखंड भारत दिवस

केलवाड़ा(बारां) –विश्व हिंदू परिषद व बजरंग दल प्रखंड

केलवाड़ा के कार्यकर्ताओं द्वारा अखंड भारत दिवस टंकी वाले हनुमान मंदिर परिसर में मनाया गया कार्यक्रम की शुरुआत भारत माँ के समक्ष दीप प्रज्वलित कर,पुष्प अर्पित कर की गई इस दौरानविश्व हिंदू परिषद जिला सत्संग प्रमुख राधेश्याम कुशवाह, विहिप गोरक्षा जिला प्रमुख सीताराम सुमन, विश्व हिंदू परिषद भंवरगढ़ प्रखंड मंत्री महावीर सुमन , प्रखंड सेवा प्रमुख नाहरगढ़ सोहन नागर ने उद्बोधन दिया एवं भारत को अखंड बनाने की राह पर चलने हेतु कार्यकर्ताओं में ऊर्जा का संचार किया कार्यक्रम की अध्यक्षता विहिप प्रखंड अध्यक्ष लखन ओझा ने की कार्यक्रम का समापन भारत माँ की आरती एवं सीताबाड़ी स्थित बगीची में पौधारोपण कर किया गया इस दौरान विश्व हिंदू परिषद प्रखंड उपाध्यक्ष दीपक सोनी, बजरंग दल प्रखंड संयोजक मुकेश भारती,प्रखंड व्यवस्था प्रमुख भुवनेश गोस्वामी, प्रखंड गोरक्षा प्रमुख राज सुमन, , प्रखंड छात्र प्रमुख अभिषेक चौहान, विहिप प्रखंड संगठन सह मंत्री रामवीर मीणा, निर्मल परिहार ,अनिल परिहार एवं पर्यावरण बचाओ समिति सीताबाड़ी के सदस्य मौजूद रहे

जगदीश मीणा ने अपनी माता की स्मृति में पेन व केले किये वितरण

बूंदी। स्वतंत्रता दिवस के पूर्व दिवस पर नानकपुरिया बीएलओ जगदीश

मीणा ने अपनी माता की स्मृति में रामगंजबालाजी एन सी सी कैडेट्स को एक एक पेन व केले वितरित किये।

15 दिन से लापता युवक का मिला शव

किशनगंज (बाराँ)-किशनगंज में 15 दिन से लापता हुए युवक का युवक का पार्वती नदी के पास गली सड़ी अवस्था में शव शनिवार को मिला जिसकी पहचान किशनगंज निवासी मनीष पुत्र राधेश्याम यादव उम्र 19 वर्ष के रूप में हुई जिसके बाद परिजन भी

किशनगंज चिकित्सालय में पहुँच कर पहचान कीमृतक मनीष 2 अगस्त रात्रि से घर से गायब हो गया था जिसकी रिपोर्ट परिजनों द्वारा किशनगंज पुलिस थाने में दर्ज कराई गई थी। परिजनों द्वारा रिश्तेदार परिजनों की तलाश की गई मगर कोई पता नहीं चला। शनिवार को किशनगंज के दीगोद के पास पार्वती नदी पर युवक का घड़ी साड़ी अवस्था में लाश पाई गई। किशनगंज थाना अधिकारी ओमप्रकाश वर्मा द्वारा लाश बरामद कर किशनगंज चिकित्सालय में पोस्टमार्टम हेतु लाया गया। जिसके बाद शव को परिजनो को सुपुर्द कर दिया था.

पुलिस की टीम पहुंची छबड़ा, आरोपी को लेकर पहुंची दुकान पर खंगाले रिकॉर्ड

बाराँ – चुनाव आयुक्त की साइड हैक कर फर्जी आईडी बनाने को लेकर सहारनपुर यूपी की 5 सदस्य टीम न छबडा पहुंचकर आरोपी दीपक मेहता को अपनी कस्टडी में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है वहीं डिप्टी ओमेंद्र सिंह शेखावत छबड़ा के नेतृत्व में दीपक मेहता के नेतृत्व में आरोपी की दुकान पर पहुंच कर कहीं दस्तावेजों को खंगाला तो वहीं दूसरी ओर मौके पर पहुंची सहारनपुर टीम व छबड़ा अधिकारियों की टीम से मीडिया कर्मियों ने घटना के बारे में पूछा तो कुछ भी बता देने से मना कर दिया 12 एसपी के छबड़ा आने की बात को कह कर पल्ला झाड़ लिया उक्त मामले में चुनाव आयोग की साइड है कर फर्जी वोटर आईडी बनाने के आरोपी दीपक मेहता को छबड़ा पुलिस ने कल एक दिन पूर्व ही गिरफ्तार कर लिया था आरोपी भारत निर्वाचन आयोग की वेबसाइट हैक कर फर्जी वोटर आईडी बनाता था आरोपी रूपारेल गांव का रहने वाला है उक्त मामले को लेकर चुनाव आयोग के निर्देश पर देश की जांच एजेंसियां अलर्ट हो गई थी एमपी यूपी राजस्थान में चुनाव आयोग द्वारा अलग अलग टीम बनाकर भेजा गया था उक्त गिरोह के मास्टरमाइंड विपुल सैनी को उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के नकुड के क्षेत्र से गिरफ्तार कर लिया गया था सूत्रों के मुताबिक यह लोग एमपी के हरदा निवासी हनुमान मलिक के निर्देश पर काम करते थे गिरफ्तार विपुल सैनी में छाबड़ा निवासी दीपक मेहता ने चुनाव आयोग की शायद पिछले 3 महीने से हैक कर रखी थी इनको फर्जी वोटर आईडी बनाने पर 100 से ?200 प्रति आईडी भुगतान मिलता था आरोपी दीपक मेहता ने प्रारंभिक पूछताछ में बताया कि उसने विपुल सैनी के खाते में 12 से 14 लाख भेजने की बात बताई वहीं छबड़ा सीआई रामानंद यादव ने आरोपी दीपक मेहता के अलग पांच बैंक के खाते सीज किए हैं तो मामले का खुलासा बाराँ एसपी ने छबड़ा पहुंचने के बाद ही हुआ क्योंकि उक्त मामला भारत सरकार की चुनाव आयोग से जुड़ा हुआ है।

स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर भाजयुमो की ऐतिहासिक वाहन रैली

भारत माता व अमर शहीदों के जयघोष से गूंजी शहर की सड़कें

बारां. भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सतीश द्यपूनिया, युवा मोर्चा प्रदेशाध्यक्ष हिमांशु शर्मा के आह्वान व भाजपा जिलाध्यक्ष जगदीश मीणा के निर्देश पर स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर भाजपा युवा मोर्चा के कार्यकर्त्ताओं ने जिलाध्यक्ष रोहित नागर की अगुवाई में विशाल तिरंगा वाहन रैली निकाली गई। इस दौरान युवा मोर्चा कार्यकर्त्ताओं ने भारत माता व वीर शहीदों के जयघोष से बारां नगर की सड़कों को गुंजायमान रखा। युवा मोर्चा कार्यकर्त्ता शहर के श्रीराम स्टेडियम में एकत्र हुए। जहां भाजपा जिलाध्यक्ष जगदीश मीणा ने तिरंगा झंडा लहराकर रैली को रवाना किया। रैली का समापन जिला अस्पताल परिसर स्थित शहीद राजमल मीणा पार्क में हुआ। इस दौरान वरिष्ठ नेता प्रेमनारायण गालव, पूर्व जिलाध्यक्ष आनंद गर्ग, पूर्व जिलाप्रमुख नंदलाल सुमन, पूर्व विधायक रामपाल मेघवाल, जिला महामंत्री ब्रह्मानन्द शर्मा, हरगोविंद जैन, शहर अध्यक्ष महावीर नामा, जिला उपाध्यक्ष सुरेन्द्र गालव, संजय झांब, प्रवीण शर्मा, ताराचंद गुर्जर, एसटी मोर्चा जिलाध्यक्ष धर्मवीर मीणा आदि मौजूद रहे। रैली के

बाद वरिष्ठ नेता प्रेमनारायण गालव में कार्यकर्त्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि हमारा राष्ट्रीय गौरव तिरंगा हमारे स्वाभिमान का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि कश्मीर में जब तिरंगा दिखाई नही देता था उस समय मुरली मनोहर जोशी व नरेन्द्र भाई मोदी ने कश्मीर के लाल चौक पर तिरंगा फहराया था। पूर्व जिलाध्यक्ष आनंद गर्ग ने कहा कि आजादी के बाद भी तिरंगे की आन बान शान के लिए मर मिटने वाले लोग भाजपा जैसे राष्ट्रवादी संगठनों में से ही निकले हैं। गर्ग ने कहा कि जिस लाल चौक में तिरंगा प्रतिबंधित था उसी लाल चौक को तिरंगे के रंग में रंगने का कार्य हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया है। कार्यक्रम के प्रभारी मनोज प्रजापति व सहप्रभारी रोहित नायक ने कार्यकर्त्ताओं को घन्यवाद ज्ञापित किया।

भाजपा जिला मीडिया प्रमुख राजेन्द्र शर्मा व शहर प्रवक्ता सचिन सनाढ्य ने बताया कि वाहन रैली में भाजयुमो के पूर्व जिलाध्यक्ष पुनीत माहेश्वरी, कपिल पोरवाल, गोविंद यदुवंशी, ब्रजेश यदुवंशी, मंडोला सरपंच आशीष नागर, मोरध्वज गुर्जर, निरंजन गुर्जर, विधानसभा विस्तारक तपेन्द्र सिंह, देवाशीष शर्मा, महावीर हापाहेड़ी, जितेंद्र सिंह रहलाई, भरत चौरसिया, प्रबल केदाहेड़ी, निशान्त तिवारी, अक्षय लुहारिया, मनोज प्रजापति, रोहित नायक, प्रवीण शर्मा, हिमांशु तिवारी, पवन मंडोला, श्याम सिंह, पवन चौधरी, पंकज गोयल, प्रद्युम्न शर्मा, मनीष नागर, विक्रम सोन, सुनील प्रजापति, मनीष खींची, विजय मेघवाल, दीपक भडाणा, राजू सैनी, महेश शर्मा, अमित शर्मा, रघु मीणा, भरत सनाढ्य, आशीष नागर, शैलेन्द्र नागर, जयंत डागर, दिलीप मियाड़ा सहित सैंकड़ों युवा मोर्चा कार्यकर्त्ता शामिल हुए।

देवरी के गांवों में नेटवर्क नही आने से लोग परेशान

1 माह से ठप पड़ी है बीएसएनएल की लैंडलाइन और इंटरनेट सेवा

शाहाबाद (बारां) प्रमोद गोस्वामी – एक माह से अधिक समय गुजर जाने के बाद भी देवरी क्षेत्र में बी एस एन एल की सेवा ठप पड़ी है मोबाइल फोन से लेकर इंटरनेट सेवा भी बंद है जिससे लोगों को भारी असुविधा हो रही है। कस्बे को छोड़कर क्षेत्र के सभी गांव में निजी कंपनियों की नेटवर्क सुविधा भी नही मिल रही है। लोगों का कहना है कि बीते दिनों हुई बरसात के बाद से नेटवर्क बहुत कम आने लगे हैं । अगर घर के अंदर बैठकर कोई व्यक्ति फोन पर बात करता है तो बात नहीं हो पाती है। नेटवर्क की रेंज कम होने के कारण यह परेशानी लोगों को हो रही है। देवरी से 2 किलोमीटर दूर के गांव भोयल, बील खेड़ा माल ,गंजन गांवो में घरो के अंदर नेटवर्क नही आते है । जिसके चलते लोगों को अपने घरों से बाहर आकर नेटवर्क ढूंढना पड़ता है तब जाकर कहीं लोगों की बात एक दूसरे से होती है लोगों का कहना है कि निजी कंपनियों द्वारा भी अब क्षेत्र में लगे नेटवर्क सुविधा पर नहीं है जिससे लोगों को परेशानी उठानी पड़ रही है.

कई गांव में अभी तक नहीं मिला नेटवर्क सुविधा का लाभ

वही खिरखिरी , पाटन ,बील खेड़ा डांग में डिजिटल इंडिया के दौर में भी नेटवर्क सुविधा अभी तक शुरू ही नहीं हुई है। जिससे लोगों को भारी परेशानी होती है। लोगों का कहना है कि सभी कामों में मोबाइल नंबर होना जरूरी होता है । लेकिन देवरी क्षेत्र के कई गांव में अभी तक नेटवर्क सुविधा का लाभ लोगों को नहीं मिला है। एक निजी कंपनी द्वारा डांग क्षेत्र के सांधरी गांव में अपना नेटवर्क तो खड़ा कर दिया लेकिन नेटवर्क रेंज कम होने के कारण सभी गांवो तक नेटवर्क की पकड़ नहीं पहुंची है।जिससे लोगों के मोबाइल खाली डिब्बे बने हुए हैं।

दिनदहाड़े घर से नकदी व जेवरात ले गए चोर

ग्रामीणों में आक्रोश , पुलिस प्रशासन को खरी -खोटी सुनाते बालेर कस्बे के ग्रामीण

चोर मस्त,पुलिस सुस्त

चोरों के हथियार इस गोले में

बालेर (सवाई माधोपुर)० बालेर कस्बे में इन दिनों चोरो के हौसले इतने बुलंद हैं। कस्बे में दिन दहाड़े शनिवार को एक मकान में चोरी की वारदात को अंजाम दिया। पीड़ित ने बताया कि परिवार के सभी सदस्य बालाजी के गए थे। इस दौरान चोरो ने मकान के पिछवाड़े से छत पर चढ़कर मकान में प्रवेश किया। बड़े इत्मीनान से वेणी प्रसाद गुप्ता के गोदरेज अलमारी, कमरे के ताले तोड़ कर नकदी व जेवर पर हाथ साफ कर लिया। घटना की जानकारी बहरावंडा कला पुलिस को दी गई। बहरावंडा कला थानाधिकारी श्याम सिंह , एसआई किरोड़ी लाल मीणा, पुलिस के हेडकांस्टेबल अजीत सिंह, सुरेंद्र सिंह, जयसिंह ने घटनास्थल का मौका मुआयना किया।

बेटी की फीस जमा कराने के लिए रखी नकदी उड़ाई: पीड़ित वेणी प्रसाद गुप्ता पुत्र राधेश्याम हलवाई ने बताया कि चोरों द्वारा बेटी की फीस जमा कराने के लिए रखे 50 हजार रुपए, चार चूड़ी सोने की,दो अंगूठी,दो जोड़ी बाड़ी ,मंगलसूत्र, दो जोड़ी कान की झुमकी,दस जोड़ी पायजेब चांदी की,5 जोड़ी चुटकी, फोलरी, चार नाक के काटे सहित सोने चॉदी के आभूषण चोरी कर ले गए।

मकान के गेट खुलने पर भागे: चितारा के बालाजी से वापिस घर पर लोटे परिवार के सदस्यों की आवाज सुनते ही चोर छत कूद कर भाग गए। इस दौरान चोर अपने साथ ताले तोड़ने के काम आने बाले औजार मौके पर ही छोड़ कर भाग गए। बहरावंडा कला पुलिस ने मौके से चोरी के काम आने वाले हथियार बरामद किए।

पूर्ब की चोरी की घटनाओं का नही हुआ आज तक खुलासा

कस्बे के लोगो ने बताया कि इस साल मे कई चोरिया हो चुकी है लेकिन आज तक पुलिस प्रशासन ने खुलासा नही करा।

पहले के पीड़ित – मदु शर्मा, कमलेश कुमार गुप्ता, नरेंद्र द्विवेदी, राधेश्याम लुहार, गवरी लुहार, प्रेमनारायण शर्मा

इनका कहना: बहराउंडा कला थानाधिकारी श्याम सिंह शेखावत

चोरी घटना की रिपोर्ट दर्ज कर ली गयी है। पुलिस जाप्ता सहित में मौके पर पहुँचे है। संदिग्ध में तीन लड़के सुंदर, कैलाश महावर तथा हनुमान पकड़े गए हैं! उनसे अभी पूछताछ चल रही है मामले जाँच अभी पूरी बाकी है ।

रोड़वेज परिचालक ने दिया ईमानदारी का परिचय

लक्ष्मणगढ़.

रोडवेज बस मे यात्रा कर रही महिला का पर्स बस मे गिर गया तथा महिला बस से उतर कर अपने घर चली गई बाद मे बस की परिचालक को बस मे पर्स पडा मिला तो उन्होने बस के यात्रियो से पर्स के बारे में पूछताछ की किंतु संतोषजनक जबाब नही मिलने तथा पर्स के मालिक की जानकारी नही मिलने पर रोड़वेज बस लक्ष्मणगढ़ ड़ीपो आई तो परिचालक सुभिता ख्यालिया ने इसकी जानकारी लक्ष्मणगढ़ के पूर्व पार्षद राकेश सैनी कम्प्यूटर ऑपरेटर अरविन्द काजला सुरक्षा गार्ड मदनलाल पुनिया को पूरा वाकई बताया द्य पूर्व पार्षद सैनी ने बताया कि रोड़वेज परिचालक सुभिता की ईमानदारी की मिशाल से प्रभावित हो पर्स के वास्तविक मालिक की खोजबीन शुरू कर जांगिड़ वैदिक विधालय वार्ड 32 जरीना बानो पर्स को रोड़वेज बस मे गिरने/भूलने की जानकारी बात सामने आई तो जरीना बानो को उसका पर्स वापस लौटाकर परिचालक ने ईमानदारी का परिचय दिया .

मेन मार्केट बारां व्यापार मंडल द्वारा स्वतंत्र दिवस पर प्रताप चौक पर होगा ध्वजारोहण

बारां . शहर के मेन मार्केट व्यापार मंडल मेन मार्केट प्रताप चौक से संस्था धर्मादा चोराहा तक के व्यापारियों द्वारा स्वतंत्रता दिवस बड़े हर्षोल्लास से मनाया जाएगा । इस अवसर पर प्रताप चौक स्थित महाराणा प्रताप की विशाल घोड़े पर सवार प्रतिमा के समक्ष राष्ट्रीय ध्वजारोहण किया जाएगा। व्यापार मंडल के अध्यक्ष सुरेंद्र कुमार गालव ने बताया कि व्यापार मंडल द्वारा।5वां स्वतंत्रता दिवस प्रात: 9ः बजे महाराणा प्रताप चौक पर ध्वजारोहण कर समारोह पूर्वक मनाया जाएगा एवं संस्था धर्मादा चौराहा से प्रताप चोक तक तिरंगे कलर के गुब्बारे से समारोह स्थल तक बाजार को सजाया जाएगा बीजली पोलो पर तिरंगा झंडै लगाये जाएगे । मेन मार्केट व्यापार मंडल के प्रवक्ता मनीष गर्ग ने बताया कि स्वतंत्रता दिवस समारोह के मुख्य अतिथि व्यापार मंडल के संरक्षक वरिष्ठ पत्रकार एवं पत्रिका ब्यूरो समाचार पत्र के संपादक कुश कुमार मिश्रा होंगे। अध्यक्षता व्यापार मंडल के अध्यक्ष सुरेंद्र कुमार गालव करेंगे व विशिष्ट अतिथि के रूप में केट के जिलाध्यक्ष कमलेश गोयल होंगे। उन्होंने बताया कि स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर प्रत्येक दुकानदार को तिरंगा झंडे वितरित किए गए। उसके बाद मेन मार्केट में तिरंगा रैली निकाली और प्रताप चौक पर प्रसाद का वितरण किया गया तथा स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित समारोह का समापन व्यापार मंडल के कार्यालय म गालव टेंट हाउस पर किया गया।

39 जनों को किया जाएगा सम्मानित

बाप (कविकान्त खत्री). राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बाप के खेल मैदान में आयोजित होने वाले उपखंड स्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 39 जनों को सम्मानित किया जाएगा। उपखंड अधिकारी हरि सिंह देवल व तहसीलदार प्रतिज्ञा सोनी ने बताया कि चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर दौलत कुमावत, एलएसए संगम लता व नरेंद्र शुक्ला, महीराम, भगवती सोनी, आईबग्स तंवर, एएनएम विमला खोजा, राजेंद्र चारण, आशा सहयोगिनी निजु, केसर देवी, श्रीमती ललिता पालीवाल, उमेश कुमार, राजेंद्र कुमार, रमजान खान, रुपाराम, तोलाराम, पुरखाराम पूनड़, ओम प्रकाश भैया, पंकज घोड़ेला, नरेंद्र सिंह, सुश्री बसीरो, अनदाराम, कनिष्ठ अभियंता रोहिताश बिश्नोई, मोटाराम, अशोक, सृष्टि खड़गा, लेखा सहायक प्रेम जोशी, कनिष्ठ तकनीकी सहायक कुंवर सेन, प्रेम प्रकाश मीणा, महिपाल बिश्नोई, भूराराम, सुभाष चंद्र, दुर्ग सिंह, रामस्वरूप, कालूराम, सुरजा राम भील, मनोज व्यास, बुद्धा राम विश्नोई, रामचन्द्र पंवार को सम्मानित किया जाएगा।

पौधारोपण कर मनाया बेटी का जन्मदिन

बूंदी । बेटी अंशिका के जन्मदिन पर रूपनगर के ओमप्रकाश मीणा ने श्री मत्स्य भगवान मंदिर पर पौधारोपण किया। जिसमें बोतल पाम व फाइकस आदि सजावटी पौधे लगाए और उनकी सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए। ओमप्रकाश का कहना है पर्यावरण संरक्षण की दिशा में हम सभी को आगे आना चाहिए जेंडर जस्टिस को सुनिश्चित करने का काम सरकार के साथ साथ हम सभी नागरिकों का भी कर्तव्य है इस दौरान वत्सल मीणा व सोसाइटी ऑफ कंजर्वेशन ऑफ हिस्टोरिकल इकोलॉजिकल रिसोर्सेज के कार्यकर्ता व परिवार जन मौजूद रहे।

देवरी में सी एल जी सदस्यों की बैठक में की चर्चा

शाहाबाद (बारां) – तोहारी सीजन के चलते उपखंड के सभी कस्बों में थाना अधिकारियों और पुलिस के उच्च अधिकारियों द्वारा शांति समीक्षा की बैठकों का आयोजन किया जा रहा है । शनिवार शाम को चौकी परिसर में आगामी त्योहारों के चलते शांति, सौहार्द पूर्वक मनाने को लेकर सी एल जी सदस्यों की बैठक की गई। बैठक में पुलिस उपाधीक्षक कजोड़ मल की अध्यक्षता में आयोजित की गई । पुलिस उपाधीक्षक ने आगामी त्योहार रक्षाबंधन, मोहर्रम सौहार्दपूर्वक मनाने की बात कही । वहीं थानाधिकारी खेम सिंह नरुका ने कहा कि शांति व्यवस्था में पुलिस का सहयोग करने की अपील की । त्योहारों को आपसी सौहार्द के साथ मनाये ज्यादा भीड़ वालों ना करें। साथ ही कस्बे सीसीटीवी कैमरा लगवाने को लेकर भी चर्चा हुई। पुलिस उपाधीक्षक ने क्षेत्र में चल रहे बैंकिंग फ्रॉड के बारे में भी लोगों को जानकारी देकर सचेत रहने की अपील की। इस दौरान बैठक में देवरी चौकी प्रभारी हेमचंद मालव, पूर्व प्रधान हरिओम गुप्ता भाजपा के नरेश सिंह सिकरवार, इसाक मोहम्मद, हरिशंकर शर्मा, देवरी सरपंच करण सहरिया, रामदयाल नामदेव ,रईस मोहम्मद, शाहिमा खान ,पदम गोस्वामी , हरीश दारा, मुकेश कुमार सहित करीब दो दर्जन से अधिक सदस्य मौजूद रहे।

प्रशिक्षण आयोजित

बाप . दूसरा दशक द्वारा तीन दिवसीय गैर आवासीय जीवन

कौशल प्रशिक्षण मालियों के बास बाप में आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में कंचन थानवी ने गर्भवती महिलाओं के टीकाकरण, बच्चों का टीकाकरण, पोषण पर समझ बनाई गई। दूसरा दशक कार्मिक भंवर लाल ने गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का माहौल बनाने के लिए दूसरा दशक द्वारा शुरू किए गए स्वस्थ माँ अभियान के बारे में जानकारी दी। इखवेलो प्रभारी सरोज ने टीकाकरण के प्रति किशोरियां अपनी समझ बना कर समाज मे अपनी नई पहचान बना सकते हैं। प्रशिक्षण के दौरान किशोरियों ने अपनी माँ की खूबियों व उनकी स्वास्थ्य समस्याएँ के बारे में समझ बनाने का प्रयास किया। प्रशिक्षण के दौरान टीकाकरण के प्रोजेक्ट पर किशोरियों की समझ बनाई गई। किशोरी दीपिका में कहा की गर्भवती महिलाओं का हम सभी को ख्याल रखना चाहिए। प्रशिक्षण के अंत में देवी मंदिर के पास समुदायिक सभाभवन के पास किशोरियों द्वारा पौधरोपण भी किया गया। इस दौरान मंजू, स्नेहा, सिद्धि अंजू, पूजा ने अपने अनुभवों को शेयर किया।

बाप में 10 व घंटियाली में 6 नाम निर्देशन पत्र हुए जमा

बाप. पंचायती राज आम चुनाव 2021 के तहत पंचायत समिति बाप क्षेत्र से वार्ड सदस्यों के चुनाव लड़ने हेतु नाम निर्देशन पत्र जमा होने का कार्य जारी है। उपखंड अधिकारी व रिटर्निंग अधिकारी हरि सिंह देवल ने बताया कि शनिवार को पंचायत समिति बाप क्षेत्र के लिए 8 प्रत्याशियों ने 10 नाम निर्देशन पत्र जमा करवाएं। देवल ने बताया कि वार्ड नंबर 10 से भूरी व धापू ने भारतीय जनता पार्टी से नाम निर्देशन पत्र जमा करवाएं। इसके अलावा वार्ड नंबर 7 से प्रेमाराम व गिरधारी राम ने कांग्रेस पार्टी से, वार्ड नंबर 15 से कानाराम व फुसाराम ने कांग्रेस पार्टी से तथा वार्ड नंबर एक से बबीता गोदारा व अंजू ने दो-दो नाम निर्देशन पत्र जमा करवाएं। बबीता व अंजू ने कांग्रेस व निर्दलीय से नाम निर्देशन पत्र जमा करवाएं।

ये हैं बॉलीवुड की वो फिल्में, जो रग-रग में भर देगी देश भक्ति का जज्बा

निराला समाज, जयपुर।

भारतीय सिनेमा की शुरूआत आज से सौ साल से पहले से हो चुकी थी इस दौरान इस इंडस्ट्री ने गुलामी भी देखी और आजादी भी। आजादी से पहले भी देशभक्ति से ओतप्रोत फिल्में बनीं और आजादी मिलने के बाद भीज्जब देश को आजादी मिली तब तो मानो जैसे हिंदी सिनेमा के लिए देशप्रेम एक ऐसा सब्जेक्ट मिल गया, जिसे खूब भुनाया गयाज्तब से लेकर अब तक कई देश भक्ति से जुड़ी फिल्में बन चुकी हैं जो बॉक्स ऑफिस पर सुपरहिट साबित हुई है । सही मायने में आजादी क्या है, इस बात को कुछ फिल्मों में बखूबी दर्शाया गया है। फिर चाहे बात आजादी अपने समाज से हो, तो कभी अपने परिवर से या फिर कभी खुद की बनाई हुई बेडियों सेज आज हम 75वीं वर्षगांठ के मौके पर कुछ ऐसी फिल्मों का जिक्र कर रहे हैं, जो सही मायने में हमें आजादी का नया आईना दिखाती हैंज्ये बताती हैं आजादी के नए मायनेज

शहीद- 1965

1965 में बनी देशभक्ति की सर्वश्रेष्ठ फिल्मों में सं एक फिल्म थी शहीद'जिसने देशभक्ति के जज्बे को रग रग में बसा दिया थायह फिल्म भगत सिंह के जीवन पर आधारित थी। जिसकी कहानी स्वयं भगत सिंह के साथी बटुकेश्वर दत्त ने लिखी थी। इस फिल्म के गीत दिल को झरझोर देने वाले थे। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर बनी यह फिल्म अब तक की सर्वश्रेष्ठ फिल्मों से क रही है।

फिल्म 'बॉर्डर' 1997

इस फिल्म की कहानी भारत-पाकिस्तान की लड़ाई से जुड़ी है। जिसे बड़े ही विस्तार से समझाया गया है। इस फिल्म की कहानी 1971 में लोंगेवाला मे हुए भारत-पाकिस्तान की लड़ाई को काफी अच्छी करह से दर्शाया गया है, जहां राजस्थान में 120 भारतीय जवान सारी रात पाकिस्तान की टांक रेजिमेंट से जमकर मुकाबला करते थे।

3. लक्ष्य- 2004

फरहान अख्तर द्वारा निर्देशित 'लक्ष्य' 2004 में रिलीज हुई थी। इस फिल्म की कहानी 1999 के कारगिल युद्ध की घटनाओं पर आधारित थी। जिसमें मुख्य भूमिका में ऋतिक रोशन, प्रीति जिंटा, अमिताभ बच्चन, ओम पुरी और बोमन ईरानी लीड रोल में थे।

4. 'मंगल पांडे-द राइजिंग'

फिल्म 'मंगल पांडेू द राइजिंग' क्रांतिकारी मंगल पांडे की जिंदगी पर आधारित है। मंगल पांडे को अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई का आगाज भी माना जाता है। फिल्म में मंगल पांडे का किरदार आमिर खान ने निभाया था।

5. रंग दे बसंती

साल 2006 में रिलीज हुई फिल्म रंग दे बसंती ने ना सिर्फ सफलता का रिकॉर्ड तोड़ा, बल्कि ऐसा सोशल मैसेज दिया, जिसे लेकर यूथ को सोचने पर मजबूर कर दिया। कि हम कहां जा रहे हैं? हमारी जिंदगी का मकसद क्या है? डायरेक्टर राकेश ओमप्रकाश मेहरा की इस फिल्म ने आमिर खान के कॅरियर को एक नई दिशा दी। इतने सालों बाद भी यह फिल्म युवाओं की पसंदीदा फिल्मों में से एक है। फिल्म के डायलॉग आज भी लोगों की जुबान पर हैं।

6.लगान (2001)

फिल्म लगान में अपनी मिट्टी से जुड़े लोगों के उस आत्मबल को दर्शाया गया है जिसमे लोग अपना हथियार बनाकर अंग्रेजो से लड़ने के लिए तैयार रहते हैं। इसमें भुवन नाम का नायक अपनी मिट्टी से जुड़कर अपने लोगों के लिए आखिरी वक्त तक लड़ता है और अपनी कभी न हार मानने वाली जिद की वजह से ही जीतता है।

7.'द लेजेंड ऑफ भगत सिंह'

फिल्म 'द लेजेंड ऑफ भगत सिंह' में अजय देवगन भगत सिंह का किरदार निभाते नजर आए थे। यह फिल्म भगत सिंह को दर्शाती है। जिसने देश की अजादी के लिए हंसते हंसते जान न्यौछावर कर दिया।

8. 'भुज

अजय देवगन की फिल्म 'भुज भारतीय वायुसेना और स्थानीय नागरिकों की शहादत की कहानी बयां करती हैइस फिल्म की कहानी उन वीर जवानों की शहादत को याद करती है। जिन्होंने देश के लिए बलिदान होने के लिए अपना जीवन जोखिम में डाला। यह वो समय था, जब देश को आजाद कराने में ना केवल सेना ने हिस्सा लिया था बल्कि आम नागरिकों ने भी अपना जज्बा दिखाने में कोई कसर नही छोड़ी थी। देश के लिए मर मिटे थे भुज के लोग..

9. तिरंगा

ये फिल्म तो सबने देखी होगा। साल 1993 में आई फिल्म तिरंगा देश भक्ति की भावना से सराबोर फिल्म में राज कुमार और नाना पाटेकर ने दमदार अभिनय ने चार चांद लगा लगा दिए हैं।

10.क्रांति

साल 1981 में आई फिल्म क्रांति भी देशप्रेम की भावना से भरी फिल्म थी। इस मल्टीस्टारर फिल्म में मनोज कुमार के अलावा दिलीप कुमार, शत्रुघ्न सिन्हा, शशि कपूरजैसे बड़े कलाकार नजर आए थे. 3 करोड़ की लागत में बनी इस सुपरहिट फिल्म ने 10 करोड़ का बिजनेस किया था।

ऐ वतन तेरे लिए ...

भारतीय हिंदी फिल्मों के कई निर्माता निर्देशक ने देश में फैल रहे भ्रष्टाचार, तस्करी, आतंकवाद, सामाजिक विषमता, आर्थिक, राजनैतिक, सांप्रदायिक मुद्दों पर भी फिल्में बनाई है और यह सिलसिला आज तक जारी है। आजादी के बाद सन् 1954 मे आयी देशभक्ति पर आधारित फिल्म 'जागृति' में देशभक्ति का संदेश था। 1961 की फिल्म 'गंगा जमुना' जो आजादी की लड़ाई की कहानी थी जिसमें दिलीप कुमार अभिनेता थे। इन्हे इस फिल्म में सर्वश्रेठ अभिनय का फिल्मफेयर पुरस्कार भी मिला। 'काबुलीवाला(1961)' की ऐसी फिल्म थी वही भी दर्शकों ने बहुत सराही। निर्देशक एस. राम शर्मा द्वारा निर्देति 1965 की फिल्म %शहीद' जिसमे मनोज कुमार ने शहीद भगत सिंह की यादगार भूमिका निभाई थी। उसके बाद कई फिल्में भगत सिंह के नाम पर बनी लेकिन ये फिल्म आज भी एक मिसाल है। इस फिल्म को कई पुरस्कार भी मिले। निर्माता निर्देशक चेतन आनंद की 1965 में एक फिल्म आयी 'हकीकत' जिसमें जिसमें अभिनेता थे धर्मेन्द्र यह फिल्म भी सुपरहिट रही। जय जवान जय किसान के नारे को ध्यान में रखते है मनोज कुमार की फिल्म 'उपकार' 1967 में आयी। इस फिल्म के माध्यम से यह बताया गया कि भारत के किसान जो धरती से धान उगा सकते है वह जरूरत के समय बन्दुक भी उठा सकते है। 'उपकार' फिल्म को 1968 में सर्वश्रेठ फिल्म का फिल्मफेयर पुरस्कार भी मिला। अभिनेता मनोज कुमार की एक और फिल्म 1970 में आयी 'पूरब और पश्चिम' जो भारत और विदेशी संस्कृति के संबंध में थी। इस फिल्म के माध्यम से दर्शकों को भारत की संस्कृति की महानता को दर्शाया गया था। देशभक्ति के जज्बे को लेकर 1972 में 'ललकार' फिल्म आयी जिसमें धर्मेन्द्र और राजेन्द्र कुमार कलाकार थे। निर्देशक अभिनेता मनोज कुमार की 1981 की फिल्म 'क्रांति' आयी जो अंग्रेजो के खिलाफ बगावत थी। इस फिल्म में कई मशहुर कलाकार थे जिसमें दिलीप कुमार, शशि कपूर, शत्रुध्न सिन्हा, हेमा मालिनी, परवीन बॉबी आदि। इसके अतिरिक्त मनोज कुमार ने 'रोटी कपड़ा और मकान', 'दोवासी', 'क्लर्क' जैसी फिल्में भी देश में फैली समस्याओं को ध्यान में रखते हुए बनायी। अभिनेता मनोज कुमार के दोभक्ति के जूनून को देखते हुए उन्हें फिल्म उद्योग में भारत कुमार के नाम से भी जाना जाता है। निर्देशक शेखर कपूर द्वारा निर्देशित फिल्म 1987 में फिल्म बनी 'मि. इण्डिया'। इस फिल्म के मुख्य कलाकार थे अनिल कपूर, श्रीदेवी और अमरिश पुरी। यह एक आम हिन्दुस्तानी की कहानी है जो खतरनाक डॉन मूगेम्बो से लड़ता है। मूगेंम्बों दुनिया पर राज करना चाहता है। इस फिल्म में विज्ञान के अविकार 'गेजेट' का प्रयोग किया गया है जो मि. इंडिया को मूगेम्बों से लड़ने में मदद करता है। 'मूगेम्बों खुश हुआ' डायलॉग आज भी लोगों की जुबान पर छाया हुआ है। 'यह फिल्म कॉमेड़ी के साथ साथ देशभक्ति का मिश्रण पूरा मनोरंजन देती है। देशभक्ति पर निर्माता निर्देक सुभाष घई की मल्टीस्टारर फिल्म 'कर्मा' भी बहुत हिट रही जिसमें दिलीप कुमार, नूतन, नसीरूद्धीन ााह, अनिल कपूर, जैकी श्रॉफ, दारा सिंह, अनुपम खैर जैसे मुख्य कलाकार थे। मनीरत्नम की फिल्म 'रोजा' जो कि आतंकवादियों के खिलाफ कश्मीर के मूद्दये पर बनी जो बहुत चर्चा में रही और इसने भी तीन राट्रीय पुरस्कार जीते। 1997 में जे.पी दत्ता की फिल्म आयी 'बोर्डर' जो भारत-पाकिस्तान के युद्ध पर आधारित थी। यह फिल्म ब्लॉक बस्टर हिट थी। इसमें सनी देओल, सुनील शेट्टी, जैकी श्रॉफ, अक्षय खन्ना के अलावा पुनीत इस्सर, कलभुाण खरबंदा आदि कलाकार थे। इसका संगीत भी सुपरहिट रहा। निर्देशक आशुतोष गावरकर द्वारा निर्देति सन् 2001 मे देशभक्ति को ध्यान मे रखते हुए एक अलग विाय पर फिल्म आयी 'लगान'। इस फिल्म में हीरो थे आमिर खान। इन्हे 2002 में इस फिल्म में सर्वश्रेष्ठ अभिनय के लिए व 'लगान' फिल्म को बेस्ट फिल्म का फिल्मफेयर अवार्ड मिला। जैसा कि नाम से ही लगता है कि अंग्रजो के लगान से बचने के लिए गांव वाले उनसे क्रिकेट के मैच की चुनौती स्वीकार करते है और गांव वाले फिल्म के अन्त में किक्रेट मैच जीत कर लगान मुक्त होते है। यह फिल्म अलग थीम के साथ थी और इस फिल्म का गीत संगीत भी सुपरहिट था। सन् 2006 की राकेश ओमप्रकाश द्वारा निर्देशित फिल्म 'रंग दे बसन्ती' जो देश में चल रहे भ्रटाचार के संबंध में थी इसमें भी आमिर खान ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। यूथ को अन्याय के विरूद्ध संदेश देती इस फिल्म ने देशभक्ति की भावना को नये माध्यम से दर्शाया। 2007 में इस फिल्म कों को बेस्ट फिल्म का फिल्मफेयर अवार्ड मिला। इसके अलावा आमिर खान ने 'बाजी' और 'सरफरोश' जैसी देशभक्ति से ओत-प्रोत फिल्म में भी सराहनीय भूमिका निभाई। इसी तरह सुपर स्टार अमिताभ बच्चन ने में फिल्म 'देश प्रेमी', 'पुकार', 'इंकलाब', 'शान', 'मर्द' जैसी रोमांचक फिल्मों के जरीये देशभक्ति की भावना को जगाया। 'मर्द' फिल्म में अमिताभ के साथ दारासिंह भी थे यह फिल्म दर्शको को बहुत पसन्द आयी। 'मर्द को दर्द नहीं होता' यह डायलॉग आज भी दर्शको को याद है। अभिनेता राजेश खन्ना ने भी फिल्म 'अपना देश' और 'आक्रमण(1975)' देशभक्ति पर बनी फिल्मों में अपने बेहतर अभिनय को दिखाया। इसी तरह शाहरूख खान ने 'स्वदेश', 'दिल से' व 'चक दे इंडियां' फिल्म के माध्यम से देशभक्ति की भावना को दर्शकों तक पहुंचाया। इसके अलावा बहुत सी फिल्में जिसमें 'आनंद मठ', 'सिकंदर ए आजम', 'सन ऑफ इंडियां', देव आनंद की 'प्रेम पुजारी(1970)', दिलीप कुमार वैजयंती माला की 'नया दौर', नरगिस, राजेन्द्र कुमार और सुनील दत्त की 'मदर इंडिया', 'हम हिन्दुस्तानी' जितेन्द्र की 'फर्ज', धर्मेन्द्र की 'आंखे', राजकुमार की 'हिन्दुस्तान की कसम(1973)' और 'तिरंगा', राजेन्द्र कुमार की 'धरती', सनी देओल की 'गदर', 'मां तुझे सलाम', 'द हीरों' कई फिल्में है जो देश प्रेम पर आधारित है।

देशभक्ति पर आधारित फिल्में इसी तरह आगे भी बनती रहेगी क्योंकि भारत देश में कई तरह की नई समस्याएं पैदा हो रही है और नये-नये विषय पर फिल्में बॉलीवुड के निर्माता निर्देशक नयी-नयी सोच के साथ इन पर बेहतर फिल्मे बनाकर समाज में नई क्रांति लानें की ओर अग्रसर है।

कहीं हम आजाद देश के गुलाम तो नहीं?

जब हमारा देश भारत अंग्रेजों के अधीन था, उस समय हर आदमी के जीवन का उद्देश्य भार??त को अंग्रेजों की गुलामी से आजाद कराने का था। तब उनके पास इसके अलावा और कुछ भी सोचने के लिए नहीं था। आज स्वंतत्र भारत का परिदृश्य ही कुछ और है। 15 अगस्त 2021 देश का 75वां स्वतंत्रता दिवस, वैसे तो कहने को हम आजाद हैं पर क्या वास्तव में हम आजाद हैं? करिये, करिये खुद से सवाल करिये एक बार क्या हम वास्तव में आज़ाद हैं? वैसे आज़ादी का मतलब क्या हैं आपके लिए? क्योंकि हर किसी के लिए आज़ादी के मायने अलग हैं, मेरे अलग, आपके कुछ अलग मेरी नज़र में तो 15 अगस्त 1947 को सिर्फ भारत आज़ाद हुआ था, भारतवासी नहीं । कहाँ आज़ाद हुए हम?? हम आज भी गुलाम हैं। हम गुलाम हैं उन सदियों पुरानी दकियानूसी मान्यताओं के जहाँ दहेज लेना आज भी सम्मानीय माना जाता हैं की इसके लालच में हत्याएं होती हैं, बहु को जलाया जाता हैं, कम दहेज पर घर से निकाला जाता हैं। हम गुलाम हैं जात पात के बंधन के, हम गुलाम हैं आरक्षण रूपी बेड़ियों के, हम गुलाम हैं धर्मान्धता के, ढोंगी बाबाओं के, उनके तथाकथित चमत्कारों के। हम गुलाम हैं इन राजनीतिक लालची गिद्धों के, जो जब चाहे, जैसा चाहे हमारा इस्तेमाल करते हैं और हम इन्हें अपना सर्वेसर्वा समझ लेते हैं। जहाँ आज भी एक बोटल दारू, लैपटॉप, स्कूटी या चावल की बोरी पर हम अपना वोट बेच देते हैं, या फिर जात देख कर वोट बेच देते हैं। हम गुलाम हैं अपनी पुरातन सोच के जहाँ कन्या जन्म को हेय दृष्टि से देखा जाता हैं, शादी के बाद लड़की को उसकी इच्छानुसार जीने नहीं दिया जाता। हम गुलाम हैं बेटा-बेटी, बहु-बेटी फ़र्क़ के, हम गुलाम हैं समाज मे झूठे दिखावे के, हम गुलाम हैं अंधी प्रतिस्पर्धा के जहाँ हम अपने बच्चों का बचपन छीन लेते हैं। हम गुलाम हैं एक विदेशी भाषा के की अपने ही देश में अपनी ही भाषा का कोई महत्व नहीं। हम गुलाम हैं अपने अहम के जहाँ अपने ही अपनो को नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं। गुलाम हैं अवचेतन में बैठी हवस के जहाँ मासूम बच्चीयों के भी बलात्कर होते हैं। हम गुलाम हैं अपनी अधूरी इच्छाओं के जिनको पूरा करने का बोझ हम अगली पीढ़ी पर डाल देते हैं। हम गुलाम हैं नकुरुतियों, दूषित परंपराओं, बकवास मान्यताओं की हम सदियों से गुलामी करते आ रहें हैं। हम कैसे मान ले कि मेरा देश आजाद हैं जबकि सड़क पर कोई महिला, लड़की, बच्ची तक सुरक्षित नहीं। कैसे मान ले कि देश आजाद हैं, जबकि हर इंसान गुलाम हैं। स्वतंत्रता का अर्थ यह कतई नहीं है कि स्वच्छंद होकर मनमानी की जाए। अपनी मर्यादा को भूलकर सरेआम अनैतिक कृत्य किए जाएं। देश के सभी लोग स्वतंत्रता का सही-सही आशय समझें।

डस्की स्किन के लिए ट्राय करें मेकअप टिप्स

खूबसूरत दिखने के लिए सब से जरूरी है स्वस्थ, चमकती स्किन न कि गोरा रंग. चमकती स्किन के लिए स्वस्थ जीवनशैली और खानपान, अच्छा स्वास्थ्य, गहरी नींद और मन की शांति जरूरी है.

आइए, जानें आश्मीन मुंजाल से सावंली सूरत के लिए मेकअप टिप्स...

सब से पहले यह देखें कि आप के चेहरे पर अनचाहे बाल न रह जाएं. आइब्रोज, अपर लिप्स, लोअर लिप्स, फोरहैड, चीकबोन जैसी जगहों पर आने वाले अनचाहे बालों को साफ रखें. जरूरी लगे तो उन्हें कंसील कर लें ताकि आप का लुक उभर कर सामने आए.

अब मेकअप शुरू करें. स्किन टोन के साथ स्किन टैक्सचर का भी ध्यान रखें. सब से पहले एक अच्छे प्राइमर के साथ शुरुआत करें. यदि स्किन में ड्राइनैस, पैचीनैस या अनइवननैस है तो ब्यूटी बाम का प्रयोग कर सकती हैं.

प्राइमर के बाद फाउंडेशन लगाएं. (स्किन टाइप और जरूरत के हिसाब से फाउंडेशन ग्लौसी, जैल बेस्ड, एचडी या सिलीकौन लें) ध्यान रखें कि फाउंडेशन सेम स्किन टोन का ही लें. डस्की स्किन पर थोड़े भी फेयर टोन के फाउंडेशन का प्रयोग किया जाए तो स्किन चोक्ड और व्हाइट लगने लगती है.

कंटूरिंग भी डस्की स्किन मेकअप में सब से महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है. अपने चेहरे के उभारों को हाईलाइट करें और गड्ढों को भरें. इस से स्किन इवन और अट्रैक्टिव नजर आती है.

बेस, फाउंडेशन, कंटूरिंग और ब्लशऔन के बाद लिप मेकअप करें. डस्की स्किन में लिप मेकअप के लिए ब्राउन, मरून, रैड और चैरी रैड जैसे अर्थी कलर्स या फिर कोरल कलर्स का प्रयोग करें.

आई मेकअप पर खास ध्यान दें. स्मोकी आईज के लिए ब्लैक ट्राई न करें, बल्कि वाइन स्मोक, ब्राउन स्मोक, ग्रे स्मोक जैसे औप्शन और कोरल कलर्स ट्राई करें. फेक आईलैशेज भी ब्यूटीफुल इंडियन लुक के लिए ट्राई कर सकती हैं.

चमकदार रंगों का प्रयोग न करें. यलो, औरेंज, नियोन जैसे कलर्स अवौइड करें. ये चटकदार रंग हैं जो सांवली सूरत पर अच्छे नहीं लगते. हलके और स्किन टोन से मैच करते रंग आप के ऊपर ज्यादा खूबसूरत लगेंगे. आप प्लम, ब्राउन, लाइट पिंक, रैड जैसे कलर्स ट्राई कर सकती हैं.

जब बात फौर्मल लुक की हो तो बेज कलर की सिंपल शौर्ट ड्रैस पहन सकती हैं जिस में प्रिंट का काम किया गया हो. ऐसी शौर्ट ड्रैस के साथ हाई हील्स, स्मार्ट वाच और कोट पहन कर औफिस लुक कैरी किया जा सकता है. सैल्मन पिंक कलर का प्रौपर फौर्मल आउटफिट बहुत शानदार लगेगा.

डस्की ब्यूटी ड्रैसिंग स्टाइल्स

मेकअप डिजाइनर आशिमा शर्मा कहती हैं कि यदि आप का स्किन टोन डस्की है तो आप कुछ बातों का खास ध्यान रखें-

डैनिम कलर के कपड़े पहनें, जैसे डैनिम जींस, प्लाजो, डैनिम शर्ट आदि.

आप अपने कपड़ों फैब्रिक के साथ खेल कर भी फैबुलस लुक पा सकती हैं. अगर आप ब्लैक कलर की शौर्ट ड्रैस पहन रही हैं और उस में नैट, शिफौन जैसे फैब्रिक मौजूद हों, तो ये आप के लुक को निखारने में सहायता करेंगे.

ब्लिंगी गोल्ड आप के लिए बेहद शानदार साबित हो सकता है. यदि आप को गाउन पहनना पसंद है तो आप रैड कलर का फ्लोरलैंथ गाउन पहन सकती हैं. औफशोल्डर्ड, शोल्डरलैस, सिंगलशोल्डर्ड गाउन आप पर अच्छे लगेंगे. इन के साथ अपने बालों को स्ट्रेट रखें.

अगर बात फौर्मल्स की हो तो आप के लिए काफी कुछ है. हाईवैस्ट जींस को आप सौलिड ट्विस्ट टौप के साथ पहन सकती हैं. इस तरह के लुक के लिए आप अपने बाल बांध कर रख सकती हैं.

पैंसिल स्कर्ट के साथ लाइट मिंट कलर में रूफल स्ट्रिपड टौप पहनें, बालों को खोल कर रखें. सिंपल ईयरिंग के साथ लुक कैरी करें.

भाई बहन का प्यार है मीठी तकरार

रिया और रोहित दोनों भाई बहन हैं पर लड़ाई के वक़्त ऐसा लगता है कि एक दूसरे से बड़ा उनका कोई दुश्मन नही है.अभी कुछ दिनों से दोनों में बोलचाल बंद है.आज रिया का प्रेसेंटेशन है उसे जल्दी कॉलेज पहुंचना है पर गाड़ी स्टार्ट ही नहीं हो रही तभी रोहित ने आवाज़ दी कि चलो छोड़ो अपनी खटारा देर हो रही है रिया तो जैसे समझ ही नही पाई और जल्दी से चल दी .कॉलेज पहुँचकर उसने रोहित को थैंक्स कहा और एक छोटी सी पहल में उनका झगड़ा ख़त्म हो गया.

अमूमन भाई बहन के रिश्ते में ये आम बात है किंतु कई बार ये आपसी मनमुटाव इतना बढ़ जाता है कि इतना प्यारा रिश्ता भी खराब सा हो जाता है.तब ये समझ नहीं आता कि किस तरह सब फिर से पहले जैसा किया जाए .अभी भाई बहन के अटूट रिश्ते का प्रतीक राखी का त्यौहार भी आने वाला है ऐसे में हम आपके लिए लाए हैं कुछ ऐसे सुझाव जिनकी मदद से आप आपसी मनमुटाव को दूर कर इस स्नेहिल रिश्ते को खूबसूरत बना सकते हैं और अपनों को करीब ला सकते हैं.

1. पहल करने में संकोच न करें

कई बार झगड़ा बहुत ही बढ़ जाता है और तू तू मैं मैं इतनी हो जाती है कि दोनों ही का मन खट्टा हो जाता है.लड़ाई बेहद हो जाने पर भी मन की भावनाएँ एक दूसरे के लिए पहले की तरह ही रहती हैं बस दोनों का अहम एक दूसरे से बात करने को रोकता है .ऐसे में आप अपना अहम तुरंत छोड़ कर स्वयं बातचीत की पहल करें फिर देखिए चुटकियों में बात बन जाएगी.

2. नए सिरे से शुरू करें

इसके लिए सबसे पहले ये सोचना बंद करना होगा कि मैं ही सही हूँ क्योंकि किसी भी लड़ाई में थोड़ी थोड़ी ग़लती दोनों पक्षों की होती है.ऐसे में बजाय दूसरे की कमी पर ध्यान रखने के अपनी कमी को पहचानने का प्रयास करें .उसके बाद मन मे ये पक्का करें कि अब ये ग़लती नहीं करेंगे ऐसे में आपका रिश्ता और मजबूत होगा.

3. राज को राज रहने दें

भाई बहन एक दूसरे के सबसे बड़े राजदार होते हैं ऐसी कई बातें होती हैं जो वो सिर्फ एक दूसरे से शेयर करते हैं पर कई बाद क्रोध या आवेश में एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए वो राज की बात किसी के सामने भी बोल देते हैं .ऐसा करने से कुछ समय को तो मानसिक संतुष्टि होती है पर बाद में अपराधबोध होने लगता है.इसलिए इस बात का हमेशा ध्यान रखें कि ये लड़ाई तो कुछ समय की है पर रिश्ता तो जीवन भर का है इसलिए लड़ाई के झोंके में एक दूसरे के राज सार्वजनिक करने से बचें .इस से रिश्ते में गहराई बनी रहेगी और विश्वास भी मजबूत होगा.

4. कारण जानने का प्रयास

कई बार लड़ाई इतनी लम्बी खिंच जाती है कि हम ये ही भूल जाते हैं कि आखिर ये शुरू क्यों हुई थी .अगर हम ये जानने का प्रयास करें कि झगड़े का मूल कारण क्या था तो उसे सुलझाना आसान हो जाएगा.कारण जानने के बाद यदि लगे कि इसे खत्म किया जा सकता है तो उसका हल करने में देर न करें .एक बात हमेशा ध्यान रखिये कि बड़ा से बड़ा कारण भी भाई बहन के पवित्र रिश्ते के सामने बहुत छोटा है.

5. दें प्यार भरा उपहार

किसी भी रिश्ते को यदि फिर से पहले की तरह स्नेहसिक्त करना है तो उपहार से अच्छा कुछ नहीं हो सकता है.

आप अचानक एक सरप्राइज गिफ्ट दे सकते हैं .गिफ्ट महंगा हो जरूरी नही बस प्यार भरा होना चाहिए. जैसे एक दूसरे की पसंदीदा चॉकलेट , कोई पसंदीदा गैजेट, एक ड्रेस या एक फूल भी दिया जा सकता है.या कोई पसंदीदा डिश अगर आपको बनानी आती है तो वो बनाकर खिलाया जा सकता है.

6. जताना भी है ज़रूरी

एक दूसरे को ये जताते रहना भी जरूरी होता है कि वो आपके लिए कितना मायने रखता है. ये रिश्ता आपके लिए अनमोल है और चाहे कितनी भी लड़ाई हो पर अगर कोई मुश्किल आती है तो आप हमेशा एक दूसरे के साथ खड़े होंगे ये विश्वास कायम रखना भी आप ही की जिम्मेदारी है.

अगर आप ये सब बातें जीवन मे अपनायेंगे तो निश्चित ही आपके इस प्यार भरे रिश्ते में चार चाँद लग जाएँगे और ये अटूट बंधन और मजबूत हो जाएगा.

शादी का मतलब खुद को खोना नहीं

कम उम्र में शादी और बच्चे, घरेलू हिंसा, समाज में दोयम दर्जा, करियर के साथ पारिवारिक जिम्मेदारियों का बोझ, कलह, वित्तीय परतंत्रता जैसी वजह उन्हें डिप्रेशन में डाल जाते हैं. वे अपना पक्ष बोलना चाहें तो उन्हें चुप करा दिया जाता है.

हाल ही में लांसेट पब्लिक हेल्थ जर्नल में प्रकाशित गए एक ग्लोबल सर्वे के मुताबिक 2016 में दुनिया भर की जितनी भी महिलाओं ने आत्महत्या की उन में हर तीसरी महिला यानि 37 ल एक भारतीय है.

कम उम्र में शादी और बच्चे, घरेलू हिंसा, समाज में दोयम दर्जा, करियर के साथ पारिवारिक जिम्मेदारियों का बोझ, कलह, वित्तीय परतंत्रता जैसी वजह उन्हें डिप्रेशन में डाल जाते हैं. वे अपना पक्ष बोलना चाहें तो उन्हें चुप करा दिया जाता है. उन की अपेक्षाओं को नजरअंदाज किया जाता है. असल में, ज्यादातर महिलाएं एक बात से ज़्यादातर जूझती हैं या यह कह सकते हैं कि उसके लिए वह तैयार नहीं हो पाती, वह मुद्दा है उन की स्वयं से अपेक्षाएं और दूसरों की उनसे अपेक्षाओं के बीच उठने वाला विरोधाभास.

28 साल की प्रज्ञा कहती हैं, शादी से पहले तो मेरा बॉयफ्रेंड अलग था. हम दोनों के बीच में बहुत अंडरस्टेंडिंग थी लेकिन शादी के बाद तो वह बिलकुल बदल गया है. मुझ से कहता है कि मुझे उसके पेरेंट्स के हिसाब से चलना होगा.ऐसा लगता है जैसे मेरा अपना कोई वजूद ही नहीं.' वस्तुतः शादी के बाद महिलाओं से खुद ब खुद आधुनिक से पारंपरिक तौरतरीकों में बदल जाने की अपेक्षा की जाती है और उन्हें इस दोहरी भूमिका की तैयारी के लिए वक्त भी नहीं दिया जाता है.

कई महिलाएं शादी के बाद काम करना चाहती हैं लेकिन उन से ऐसा नहीं करने की उम्मीद की जाती है. कभीकभी काम करने वाली महिलाओं से घर भी संभालने और साथ ही उन की कमाई भी घर में देने की उम्मीद की जाती है.

इस के अतिरिक्त छोटे परिवारों में घरेलू जिम्मेदारियों को साझा करना भी एक विवाद का विषय है. वित्तीय फैसले और यहां तक कि सामान्य निर्णय लेना अभी भी पुरुषों का एकाधिकार माना जाता है और महिलाओं पर इन मामलों से दूर रहने का दबाव बनाया जाता है.

परिवार शुरू करने के लिए अक्सर महिलाओं को अपना कैरियर छोड़ना पड़ता है और कभीकभी वह वापसी भी नहीं कर पाती हैं. आज के समय में महिला सिर्फ वित्तीय कारणों के लिए काम नहीं करती बल्कि वह इस माध्यम सेअपना वजूद महसूस करना करना चाहती हैं. जॉब उन अंदर आत्मविश्वास भरता है.

वैवाहिक संघर्ष की एक सब से बड़ी जड़ यह है कि महिला अपनी राय व्यक्त करने और निर्णय लेने की आजादी चाहती हैं लेकिन विवाह के बाद उन्हें यह नहीं मिल पाता है.

शीरोज डॉट कॉमसे जुड़ी लाइफ कोच मोनिका मजीठिया इस सन्दर्भ में कुछ उपाय बताते हुए कहती हैं, शुरुआत के तौर पर, महिलाओं को शादी से पहले कुछ महत्वपूर्ण बातचीत करने की सलाह दी जाती है. परंपराओं के दायरे में महिलाएं अपनी आकांक्षाओं और सपनों को अपने भावी जीवन साथी से साझा कर सकती हैं. ऐसा करने का मतलब अपनी कोई माँग दूसरों के आगे रखना बिलकुल नहीं है, बल्कि स्वयं की पहचान को बनाए रखना है.शादी से पहले इन बातों पर चर्चा करने की कोशिश करें अपने कैरियर, आकांक्षाएं और आप दोनों शादी के बाद इन्हें कैसे संतुलित कर सकते हैं.

आप समानता केवल तभी व्यक्त कर सकती हैं जब आप समानता खुद महसूस करती हों. अपने आप को निवेश, बचत, बीमा जैसे वित्तीय मामलों के बारे में शिक्षित करें. विवाह में अधिकतम झगड़े वित्तीय मुद्दों के कारण होते हैं, इसलिए उन्हें सुलझाएं या संतुलित कर लें.अपनी सैलरी के रूपए पूरी तरह घरवालों के सुपुर्द न करें बल्कि कुछ निवेश के लिए रख लें जो बुरे वक़्त आप के काम आये.

अपने कैरियर की योजना बनाएं. अक्सर विवाह के बाद महिलाओं पर परिवार शुरू करने और माँ बनने का अप्रत्यक्ष दवाब पड़ना शुरू हो जाता है. भले ही उन का प्रमोशन ड्यू हो पर हस्बेंड और घरवाले फॅमिली स्टार्ट करने के लिए प्रेशर डालते रहते हैं. मगर इस का मतलब यह नहीं कि आप अपना करियर भूल जाएँ.

आप को परिवार शुरू करने के लिए एक ब्रेक की आवश्यकता होगी इसलिए अपने अनुसार कैरियर के ब्रेक और काम पर अपनी वापसी की योजना बनाएं. खुद के लिए एक ऐसी दिनचर्या स्थापित करें जहां आप अपने लिए भी समय निकाल सकें. व्यायाम करें, नए कौशल विकसित करें और अपनी हॉबी पूरी करें.

नई जिम्मेदारियों को लेने का मतलब यह नहीं है कि आप अपनी उपेक्षा करें और न ही आप को इस सन्दर्भ में खुद को दोषी महसूस करने की जरूरत है. आप खुश रहेंगी तो अपने परिवार को भी खुश रख सकेंगी.

प्यार या शादी का मतलब स्वयं को खो देना अर्थात आत्मसम्मान और अपनी गरिमा भुला देना नहीं है. याद रखें अगर आप को खुद से प्यार नहीं है तो आप किसी और से भी प्यार नहीं कर सकतीं. शादी के बंधन में रह कर सदा विनम्र रहें दूसरों का सम्मान भी करें, लेकिन अपंनी बात पर हमेशा दृढ़ रहें.'

फैमिली के लिए बनाएं दाल कचौड़ी विद आलू भाजी

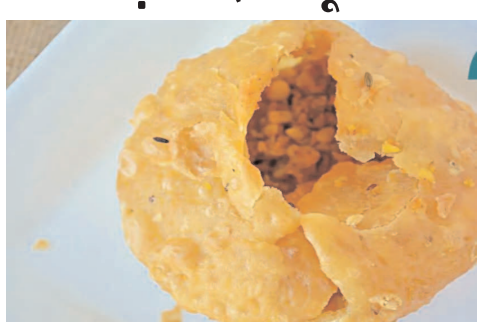

फेस्टिव सीजन में अगर आप अपनी फैमिली को टेस्टी रेसिपी ट्राय करवाना चाहती हैं तो दाल कचौड़ी विद आलू भाजी आपके लिए परफेक्ट औप्शन है. ये बनाने में आसान है, जिसके चलते आप फेस्टिव सीजन में मेहमानों की वाहवाही पा सकती हैं.

सामग्री कचौड़ी की

- 200 ग्राम मैदा
- 2 बड़े चम्मच घी मोयन के लिए
- आटा गूंधने के लिए पर्याप्त कुनकुना पानी
- कचौड़ियां तलने के लिए रिफाइंड औयल
- नमक स्वादानुसार.

सामग्री भरावन की

- 50 ग्राम धुली मूंग दाल
- 2 बड़े चम्मच बेसन
- 1 छोटा चम्मच धनिया पाउडर
- 1/2 छोटा चम्मच लालमिर्च पाउडर
- 1 छोटा चम्मच सौंफ पाउडर
- 1 छोटा चम्मच अमचूर पाउडर
- 2 छोटे चम्मच बारीक कटी अदरक व हरीमिर्च
- चुटकीभर हींग पाउडर
- 1/2 छोटा चम्मच जीरा पाउडर
- 2 बड़े चम्मच रिफाइंड औयल
- नमक स्वादानुसार.

सामग्री आलूभाजी की

- 250 ग्राम उबले व हाथ से फोड़े आलू
- चुटकी भर हींग पाउडर
- 1 छोटा चम्मच जीरा
- 1/2 कप फ्रैश टमाटर पिसे हुए
- 1/2 छोटा चम्मच लालमिर्च पाउडर
- 1 छोटा चम्मच अदरक व हरीमिर्च पेस्ट
- 1/2 छोटा चम्मच हलदी पाउडर
- 1 बड़ा चम्मच धनियापत्ती कटी
- 1 बड़ा चम्मच रिफाइंड औयल
- नमक स्वादानुसार.

विधि कचौड़ी बनाने की

मैदे में गरम घी का मोयन व नमक डाल कर गूंध लें. आधा घंटा ढक कर रख दें. धुली मूंग दाल धो कर 1 कप पानी में 5 मिनट उबालें. दाल गल जानी चाहिए पर फूटनी नहीं चाहिए. पानी निथार लें. एक नौनस्टिक पैन में तेल गरम कर के हींग पाउडर, अदरक व हरीमिर्च पेस्ट भूनें. फिर बेसन डाल कर 1 मिनट सौते करें. दाल व सभी मसाले डाल कर 3-4 मिनट तक मिक्सचर भून लें. भरावन तैयार है. मैदे की नीबू के आकार की लोइयां लें. थोड़ा थपथपा कर बड़ा करें. बीच में एक बड़ा चम्मच मिक्सचर भरें और बंद कर के हलका सा बेल दें ताकि कचौड़ी थोड़ी बड़ी हो जाएं. गरम तेल में धीमी आंच पर कचौड़ी बना लें. इन्हें 1-2 दिन पहले भी बना कर रखा जा सकता है. ओवन या एअरफ्रायर में गरम कर आलू की भाजी के साथ ब्रेकफास्ट में सर्व करें.

कोरोना की तीसरी लहर से बचने की तैयारियां शुरू

जयपुर के महिला चिकित्सालय और जेके लोन में 20-20 बैड्स का एडवांस आईसीयू शुरू, जेके लोन में भर्ती बच्चें को सिटी स्कैन के लिए नहीं जाना पड़ेगा एसएमएस

जयपुर।

जयपुर के जेके लोन हॉस्पिटल में भर्ती छोटे बच्चों के परिजनों को अब सिटी स्कैन की जांच के लिए सवाई मानसिंह (स्स्क्) या प्राइवेट लैब में नहीं जाना पड़ेगा। राज्य सरकार ने अब अस्पताल में ही नई सिटी स्कैन मशीन लगवाई है। हर रोज यहां करीब 30-40 सिटी स्कैन जांच की जा सकेगी। इस मशीन के साथ ही अस्पताल में बने एडवांस आईसीयू वार्ड का भी लोकार्पण आज चिकित्सा मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने किया।

इसके अलावा महिला चिकित्सालय सांगानेरी गेट में बने 20 बैड्स के एडवासं आईसीयू वार्ड, ब्लड कंपोनेंट सेंटर, IVF सेंटर और ऑक्सीजन प्लांट का भी शुभारंभ किया।

जे.के. लोन हॉस्पिटल में वर्तमान में बच्चें के सिटी स्कैन, एमआरआई जांच की सुविधा नहीं है। ये सुविधा नहीं होने के कारण गंभीर मरीजों की इस जांच के लिए उन्हें हॉस्पिटल के पास प्रावइेट लैब या हॉस्पिटल ले जाना पड़ता है। इस कारण मरीजों को भारी परेशानी होती थी। कोरोनाकाल के दौरान बड़ी संख्या में यहां भर्ती हुए मरीजों को सबसे ज्यादा परेशानी झेलनी पड़ी थी। इसे देखते हुए यहां एक भामाशाह डॉ. अजय गोइन्का की मशीन को डोनेट किया।

वार्ड में ही बच्चों का हो सकेगा एक्सरा और सोनेग्राफी

जेके लोन अस्पताल में बने इस एडवांस 20 बैड के आईसीयू में वेंटिलेटर, मल्टीपेरा मॉनीटर, इन्फ्यूजन पंप के अलावा यहां अल्ट्रासाउंड मशीन, हाईटैक एक्सरा मशीन, इकोकार्डियोग्राफी मशीन और सेंट्रल मॉनिटरिंग सिस्टम है। इसके अलावा यहां 12 बैड्स का हार्ड डिपेंडसी यूनिट भी तैयार करवाया गया है, जिसमें गंभीर मरीजों का भी ऑब्जर्वेशन किया जा सकता है। इसके अलावा कोरोना की तीसरी लहर की आशंका को देखते हुए हॉस्पिटल में 100 बैड्स का पिडियाट्रिक आईसीयू और 80 बैड्स की नियोनेटल इंसेंटिव केयर यूनिट भी तैयार करवाए जा रहे है।

बीकानेर में कोरोना शून्य की ओर

बीकानेर। बीकानेर में कोरोना करीब-करीब नियंत्रण में आ गया है। पिछले कई दिनों से शून्य पॉजिटिव का सिलसिला मंगलवार को भी जारी रहा, हालांकि मिल्ट्री हॉस्पिटल में एक पॉजिटिव केस मिला है, जो 34 वर्षीय युवक है।

शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में लिए गए सभी सेम्पल नेगेटिव रहे हैं। बीकानेर में अब पांच एक्टिव केस है, जबकि पीबीएम अस्पताल में कोई नया रोगी भर्ती नहीं हुआ है। डिस्पेंसरी व बड़े अस्पतालों में कोरोना टेस्ट करवाने के लिए बहुत कम लोग पहुंच रहे हैं, ऐसे में सोमवार को साढ़े तीन सौ के आसपास ही टेस्ट हो पाये थे। इनमें मिल्ट्री हॉस्पिटल का एक टेस्ट पॉजिटिव है।

कालीबाई भील मेधावी स्कूटी योजनान्तर्गत आवेदन 31 अगस्त तक

बीकानेर। राज्य सरकार द्वारा घोषणा अनुरूप संचालित कालीबाई भील मेधावी स्कूटी योजनान्तर्गत आवेदन करने की अंतिम तिथि को बढ़ाया गया है। आयुक्तालय, कॉलेज शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार छात्राओं के हित को ध्यान में रखते हुए इस योजना में सामान्य वर्ग का आर्थिक पिछडा वर्ग, माध्यमिक शिक्षा विभाग की छात्राओं एवं अनुसूचित जाति तथा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की छात्राओं हेतु ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि 31 अगस्त तक कर दी गयी है। योजना से संबधित नियम, दिशा-निर्देश विभागीय वेबसाइट पर उपलब्ध है।

सरकार दबाव में: मंत्रिमंडल फेरबदल इसी माह संभव

गहलोत के नजदीकियों ने दिए संकेत किसी भी वक्त हो सकता है ऐलान

जयपुर।

प्रदेश की गहलोत सरकार जल्द ही मंत्रिमंडल फेरबदल कर सकती है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के नजदीकी लोगों ने इस बात के संकेत दिए हैं कि प्रदेश में सियासी बयानबाजी शांत हो गई है। अब गहलोत किसी भी वक्त मंत्रिमंडल फेरबदल का ऐलान कर सकते हैं। जानकार सूत्रों का कहना है कि इसके लिए गहलोत की दिल्ली में आलाकमान से बातचीत भी हो चुकी है। आलाकमान ने फेरबदल या विस्तार का फैसला पूरी तरह गहलोत पर छोड़ दिया है।

सूत्रों का कहना है कि सितंबर में विधानसभा सत्र शुरू होने पहले सरकार अपने मंत्रिमंडल का चेहरा बदलेगी। फिलहाल मंत्रिमंडल में 9 लोगों के लिए वैकेंसी है। कांग्रेस के कुल 106 विधायक हैं। इसमें से 19 मंत्री हैं। एक मंत्री सहयोगी आरएलडी से है। इन शेष बचे विधायकों में से 45 ऐसे हैं जो पहली बार निर्वाचित होकर आए हैं। इनके मंत्रिमंडल में शामिल होने की संभावना नहीं है। 2 बार निर्वाचित हुए 27 विधायकों में से 11 फिलहाल सरकार में मंत्री हैं। इनके अलावा महेश जोशी मुख्य सचेतक तथा महेंद्र चौधरी उपमुख्य सचेतक हैं।

90 दिन से हेमाराम का इस्तीफा मंजूर क्यों नहीं : राठौड़

उपनेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ ने कांग्रेस विधायक हेमाराम चौधरी के सदन के सदस्यता से त्याग पत्र के मामले में आगामी विधानसभा सत्र शुरू होने से पहले इस मामले में निर्णय लिए जाने की मांग की है। इस संबंध में राजेंद्र राठौड़ ने विधानसभा सचिव को सोमवार को पत्र लिखा। राठौड़ ने हेमाराम के इस्तीफे के बाद की बैठक नहीं बुलाई जाने से हो रहे कार्य गतिरोध का भी हवाला इस पत्र में दिया।

राठौड़ ने कहा कि राजकीय उपक्रम समिति के लगातार दूसरी बार मनोनीत अध्यक्ष हेमाराम चौधरी ने 18 मई को राजस्थान विधानसभा के प्रक्रिया व कार्य संचालन संबंधी नियम-173 के अंतर्गत विधानसभा अध्यक्ष को अपने दिए त्याग पत्र पर समाचार पत्रों के जरिए टिप्पणी की थी कि वह अपने इस्तीफे पर अडिग हैं। इतना ही नहीं, उन्होंने यह भी कहा कि जब तक उनकी मांगों पर सुनवाई नहीं हो जाती तब तक वे अपना इस्तीफा वापिस नहीं लेंगे और राजकीय उपक्रम समिति की मीटिंग भी नहीं बुलाएंगे। राठौड़ ने पत्र में कहा कि 15वीं विधानसभा का सातवां सत्र 9 सितंबर से आहुत हो रहा है लेकिन हेमाराम चौधरी द्वारा भेजे गए त्याग पत्र के संबंध में आज 90 दिन बाद भी विधानसभा अध्यक्ष द्वारा किसी प्रकार का निर्णय नहीं लिया गया है।

गहलोत सरकार पर बरसे सतीश पूनिया, कहा

राजस्थान में अपराधियों में विश्वास और आमजन में भय की स्थिति, लेकिन सीएम सिर्फ सत्ता बचाने में लगे हुए है

जयपुर। भारतीय जनता पार्टी प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया ने प्रदेश में बढ़ते अपराधों के लिए कांग्रेस सरकार को जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने कहा कि राजस्थान में कांग्रेस के नेता सिर्फ सत्ता बचाने में जुटे हुए हैं। जिसकी वजह से अपराधी बेखौफ और आम जनता के मन में डर है। राजस्थान के हर जिले में लूट, चोरी, हत्या और बलात्कार जैसी वारदातें हो रही है। लेकिन मुख्यमंत्री के कानों में जूं तक नहीं रेंग रही। जिसकी वजह से प्रदेश की जनता का जीना दूभर हो गया है। सतीश पूनिया ने कहा कि राजस्थान में पुलिस विभाग के आंकड़ों के अनुसार ही 14% अपराधों में वृद्धि हुई है। जबकि हकीकत में यह आंकड़ा और भी ज्यादा है। उन्होंने कहा कि राजस्थान में गृह विभाग की जिम्मेदारी भी मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के पास है। जिसकी वजह से पुलिस महकमे की प्रॉपर मॉनिटरिंग नहीं हो रही। जो अब जनता के लिए परेशानी का कारण बन गया है। इससे पहले नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया ने भी राजस्थान पुलिस की कार्यशैली पर नाराजगी जाहिर की। उन्होंने कहा कि पुलिस के मुखिया महिला अपराधों की वारदातों को झूठा बता रहे हैं। अगर हकीकत में ऐसा है तो उन्हें झूठ बोलने वाले लोगों के खिलाफ कार्रवाई करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि राजस्थान देश में अपराध में नंबर वन बन गया है।

ऊर्जा मंत्री डॉ. बी. डी. कल्ला ने किया जल महल का उद्घाटन

बीकानेर। ऊर्जा, जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी मंत्री डॉ. बी. डी. कल्ला ने सुजानदेसर स्थित सूरजविहार कॉलोनी में स्व. श्रीमती सूरजदेवी व्यास एवं स्व. श्री जेठमल व्यास की स्मृति में बनाए गए जलमहल का उद्घाटन किया। इस अवसर पर ऊर्जा मंत्री ने कहा कि परोपकार से बड़ा कोई धर्म नहीं है और दूसरों को कष्ट पहुंचाने से बड़ा कोई पाप नहीं है। परोपकारी कर्म करने वालों को हमेशा याद रखा जाता है। उन्होंने कहा कि श्राद्ध पक्ष में तर्पण करने वालों की तीन, प्याऊ, तालाब, कुँए, बावड़ी और पोखर बनाने वालों की सात तथा मंदिर अथवा कोई धार्मिक स्थल का निर्माण करवाने वालों की 21 पीढ़ियों को मोक्ष मिलता है। डॉ कल्ला ने कहा कि स्वर्गीय सूरजदेवी व्यास परोपकारी महिला थी, उन्होंने अपना जीवन गरीबों की सेवा के लिए समर्पित किया था। उनकी स्मृति में परिवारजनों द्वारा करवाया गया यह कार्य अनुकरणीय है, इस कार्य से उनकी स्मृति चिरस्थाई बनी रहेगी। पूर्व सभापति चतुर्भुज व्यास ने कहा पूर्वजों की याद में परिवार द्वारा कराया गया कार्य आमजन के लिए लाभदायी रहेग। उन्होंने कहा कि इससे दूसरे लोगों को भी प्रेरणा मिलेगी। राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के पूर्व सचिव डॉ. सत्यप्रकाश आचार्य ने कहा कि पानी का जीवन में अत्यंत महत्व है। पानी के बिना जीवमात्र के अस्तित्व की कल्पना नहीं कि जा सकती। स्व. श्रीमती सूरज देवी व्यास परिवार द्वारा किया गया कार्य सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है।कार्यक्रम का संचालन डॉ विजय आचार्य ने किया। इस अवसर पर कन्हैयालाल कल्ला, समाज सेवी श्रीलाल व्यास व ललित कुमार व्यास, मालचंद जोशी, पूजा पारीक, रघुराज सिंह राठौड़, गंगा रेजीडेंसी के अशोक चौधरी, सुरेंद्र शर्मा, नमिता पारीक, अनिल कुमार व्यास, दक्ष व्यास, मिलन गहलोत आदि मौजूद रहे।

बालश्रम उन्मूलन टीम का रानी बाजार इंडस्ट्रियल एरिया में औचक निरीक्षण

बाल श्रमिकों को करवाया मुक्त

बीकानेर। जिला कलक्टर द्वारा गठित बाल श्रम उन्मूलन टीम ने मंगलवार को रानी बाजार इंडस्ट्रियल एरिया की विभिन्न फैक्ट्रियों का औचक निरीक्षण किया। टीम प्रभारी एवं बाल कल्याण समिति सदस्य हर्षवर्धन सिंह भाटी ने बताया कि इस दौरान फैक्ट्रियों के संचालकों को निर्देश दिए कि वे नाबालिग श्रमिकों को कार्य पर नहीं रखें, अन्यथा कानूनी कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। उन्होंने फैक्ट्री मालिकों को फैक्ट्री के प्रवेश द्वार पर बालश्रम नहीं करवाने का बोर्ड लगवाने के निर्देश दिए तथा बालश्रम कानून की जानकारी दी। बाल श्रम उन्मूलन टीम द्वारा फैक्ट्री में कार्यरत संदिग्ध श्रमिको के दस्तावेजों की जांच भी की गई । औचक निरीक्षण के दौरान रानी बाजार इंडस्ट्रियल एरिया की फैक्ट्री में दो नाबालिग श्रमिक भी कार्य करते हुए मिले, जिन्हें बाल कल्याण समिति के समक्ष पेश किया गया। निरीक्षण के दौरान बाल कल्याण समिति के एड.जुगलकिशोर व्यास,किरण गौड़,मानव तस्करी प्रकोष्ठ विरोधी थानाधिकारी महावीर प्रसाद,रामनिवास, चाइल्ड हेल्पलाइन की सरिता देवी रेस्क्यू टीम में मौजूद रही।

जैन मंदिर व उपासरे में घुसे चोर

दो घरों में भी किया चोरी का प्रयास

बीकानेर। बीकानेर के गंगाशहर में स्थित एक जैन मंदिर और उपासरे सहित चार घरों में अज्ञात चोरों ने देर रात ताले तोड़कर चोरी की कोशिश की। यहां कोई कीमती सामान नहीं निकला तो चोर नल ही तोड़कर ले गए। इस घटना के बाद से क्षेत्र के लोगों में रोष व्याप्त है। गंगाशहर में स्थित तुलसी विहार कॉलोनी में एक जैन मंदिर में अज्ञात चोर घुस गए। इसके बाद वहीं स्थित उपासरे में पहुंच गए। दोनों जगह तोड़फोड़ की गई। ताले तोड़कर सामान भी खंगाला गया लेकिन कोई कीमती सामान नहीं मिला। इसके बाद पास ही स्थित दो घरों में भी चोर घुसे। इनमें एक घर निर्मल दफ्तरी का है जबकि दूसरा सुरेश कोचर का है। दोनों ही घरों में उस समय कोई नहीं था। चोर ने यहां एक कमरे में घुसकर अलमारी के ताले तोड़ने का प्रयास किया। सामान भी उथल-पुथल कर दिया, लेकिन उसे कुछ नहीं मिला।

कुछ ना मिला तो टौंटियां ही ले गया

जब चोर को चारों जगह ही कोई कीमती सामान नहीं मिला तो मंदिर, उपासरे व घरों में लगे नल तोड़कर ले गया। नल आसानी से नहीं खुले तो तोड़फोड़ भी कर दी। आम आदमी के पीने के लिए लगे नल भी निकालकर ले गए। आशंका जताई जा रही है कि नशे की लत में पड़े युवकों ने ये कदम उठाया है। पहले बड़ा हाथ मारने के लिए घर में चोरी की लेकिन कहीं कुछ खास नहीं मिला।

टीसी को लेकर शिक्षा विभाग का यू-टर्न

जिन हजारों स्टूडेंट्स ने प्राइवेट को छोड़ सरकारी स्कूल में एडमिशन लिया, उन्हें टीसी के लिए फिर जाना होगा स्कूल

जयपुर।

प्राइवेट स्कूल्स के दबाव में आकर शिक्षा विभाग ने आखिरकार ऐसा निर्णय कर लिया है, जिससे हजारों गार्जन को एक बार फिर उसी प्राइवेट स्कूल में जाना होगा, जहां बिना फीस जमा कराये उन्होंने रिश्ता तोड़ लिया था और सरकारी स्कूल में एडमिशन लिया था।

दरअसल, शिक्षा विभाग ने अब ञ्जष्ट की अनिवार्यता लागू करने का आदेश निकालकर यूटर्न लिया है। इस निर्णय से एक ओर जहां प्राइवेट स्कूल संचालक खुश है क्योंकि उनकी लाखों रुपए की डूबी हुई फीस वापस आ जायेगी, वहीं पेरेंसट्स परेशान हैं क्योंकि कोरोना के दौर में हुए आर्थिक नुकसान पर ये निर्णय तकलीफ देने वाला है। दरअसल, शिक्षा विभाग ने पहले एक आदेश जारी किया था कि कोई भी स्टूडेंट अब किसी भी स्कूल में बिना टीसी के एडमिशन ले सकता है। यह आदेश किसी सरकारी या गैर सरकारी स्कूल के लिए नहीं था बल्कि सभी के लिए था। फिर भी सबसे ज्यादा स्टूडेंट्स प्राइवेट से निकले और सरकारी स्कूल में चले गए। इन स्टूडेंट्स के गार्जन को खुशी थी कि उन्हें हजारों रुपए की बकाया फीस अब नहीं देनी होगी। दो महीने बाद ही शिक्षा विभाग ने यूटर्न लेते हुए अब कहा है कि स्टूडेंट्स को टीसी हर हाल में लेनी होगी।

अब क्या बोला विभाग

माध्यमिक शिक्षा निदेशक सौरभ स्वामी ने आदेश में कहा है कि कक्षा एक से आठ तक दिए गए अस्थायी प्रवेश लेने वाले स्टूडेंट्स को अब एसआर नंबर (स्कोलर नंबर) नहीं दिया जाये। स्कोलर नंबर देने से पहले उनसे टीसी ली जायेगी। टीसी के अभाव में स्कूल में स्थायी प्रवेश नहीं होगा।

पंद्रह दिन में दें टीसी, उसी सत्र की फीस लें

शिक्षा विभाग ने इस निर्णय में प्राइवेट स्कूल को बाध्य किया है कि वो पंद्रह दिन के अंदर इन स्टूडेंट्स को टीसी दें। साथ ही ये भी निर्देश दिया है कि इन स्टूडेंट्स से उसी सत्र तक की फीस वसूली की जाये। अगर किसी स्टूडेंट ने स्कूल को सूचना दिये बिना ही अप्रैल में सरकारी स्कूल में एडमिशन ले लिया है और अब टीसी लेने आ रहा है तो उसे इस सेशन की फीस नहीं देनी है।

बिना सूचना कैसे कम होगी फीस

उधर, प्राइवेट स्कूल संचालकों के संगठन प्राइवेट एज्यूकेशनल इंस्टीट्यूट्स प्रोसपेरिटी एलायंस (पैपा) के संयोजक गिरिराज खैरीवाल का कहना है कि अगर स्टूडेंट ने लिखित में स्कूल छोड़ने की सूचना दी है तो उससे इस सेशन की फीस नहीं ली जा सकती। अगर किसी ने सूचना ही नहीं दी है तो उससे तो फीस ली जा सकती है। सरकारी स्कूल में सत्र पर्यंत एडमिशन के आदेश है, ऐसे में अब तक ऑनलाइन पढ़ाई कर चुके स्टूडेंट्स की फीस कैसे माफ हो सकती है। वहीं एक अन्य संगठन स्कूल एज्युकेशन वेलफेयर एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष कोडाराम भादू का कहना है कि दो बातें इस आदेश में स्पष्ट होनी चाहिए। पहली ये कि पंद्रह दिन में फीस जमा करवाकर ही टीसी दी जा सकेगी।

आज से कोटा-उदयपुर संभाग में फिर एक्टिव होगा मानसून

झालावाड़, चित्तौड़गढ, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा में हो सकती है बारिश; पश्चिमी राजस्थान में बारिश नहीं होने से सूखे जैसे हालात

जयपुर।

राजस्थान में बीते डेढ़ सप्ताह से सुस्त पड़ी मानसून की गतिविधियां कल से भी जोर पकड़ सकती है। पूर्वी राजस्थान में कोटा, उदयपुर संभाग के जिलों 18 अगस्त से हल्की बारिश का दौर शुरू हो सकता है। 20 अगस्त से भरतपुर संभाग में भी बारिश की संभावना मौसम विभाग ने जताई है। हालांकि पश्चिमी राजस्थान में अभी भी बारिश होने के कोई खास आसार नजर नहीं आ रहे। यहां स्थिति अब भी विकट है और सूखे जैसे हालात बन गए है। क्योंकि मानसून के पहले सीजन में जब अच्छी बारिश हुई, लेकिन यह पूर्वी राजस्थान के जिलों में ही हुई। जयपुर

मौसम विभाग के मुताबिक मानसून के वापस एक्टिव होने के पीछे कारण बंगाल की खाड़ी और उड़ीसा-आंध्रप्रदेश से लगते क्षेत्र के पास लो-प्रेशर एरिया बनना है। इसके अलावा मानसून ट्रफ लाइन की स्थिति में भी चेंज आ रहा है, जो अब उत्तर-पूर्वी हिमालय क्षेत्र से धीरे-धीरे नीचे आ रही है। मानसून ट्रफ लाईन अपनी सामान्य अवस्था से उत्तर दिशा में (हिमालय की तरफ) शिफ्ट होने और पश्चिमी हवा का प्रभाव बढ़ने के कारण राजस्थान में मानसून सुस्त पड़ गया था। मौसम वैज्ञानिकों की माने तो मानसून के सैकण्ड सीजन का असर भी पूर्वी राजस्थान में ही ज्यादा रहेगा। पश्चिमी राजस्थान में अभी भी बारिश के कोई खास आसार नजर नहीं आ रहे।

11 फीसदी कम हुई पश्चिमी राजस्थान में बारिश

मानसून की दृष्टि से राजस्थान को दो हिस्सो (पूर्वी और पश्चिमी राजस्थान) में बांटा है। पूर्वी राजस्थान के 23 में से 5 जिलों को छोड़कर शेष सभी जिलों में बारिश सामान्य या उससे ज्यादा हुई है। जबकि पश्चिमी राजस्थान के 10 जिलों में से 6 जिले ऐसे है जहां सामान्य से कम बारिश हुई है। पश्चिमी राजस्थान में सामान्यतः 157.8स्क्म् बारिश होती है, लेकिन अब तक यहां केवल 177.3स्क्म् ही बारिश हुई है, जो सामान्य से 11 फीसदी कम है।

भंवरी देवी हत्याकांड के आरोपी मलखान को जमानत

पूर्व विधायक विश्नोई पर अपहरण और हत्या की साजिश का आरोप; 10 साल बाद जेल से बाहर आएंगे, बहन सहित 7 लोग अब भी जेल में

जयपुर। भंवरी देवी प्रकरण में अपहरण और हत्या के आरोपी पूर्व विधायक मलखान सिंह विश्नोई को हाईकोर्ट ने बड़ी राहत दे दी है। राजस्थान हाईकोर्ट ने मंगलवार को विश्नोई को जमानत पर रिहा करने का आदेश दिया। वह करीब 10 साल से जेल में थे। विश्नोई भंवरी देवी के अपहरण और हत्या की साजिश रचने में पूर्व मंत्री महिपाल मदेरणा के साथ मुख्य आरोपी हैं।

भंवरी देवी प्रकरण में गिरफ्तार 17 में से अब तक 8 आरोपियों को जमानत मिल चुकी है। महिपाल इलाज कराने के लिए अंतरिम जमानत पर हैं। ट्रायल कोर्ट से जमानत याचिका खारिज होने के बाद मलखान सिंह की तरफ से मंगलवार को हाईकोर्ट में जमानत याचिका दायर की गई है। न्यायाधीश दिनेश मेहता ने मलखान के छोटे भाई परसराम को 10 दिन पूर्व सुप्रीम कोर्ट से मिली जमानत के

आधार पर जमानत पर रिहा करने का आदेश जारी किया। CBI की जांच में सामने आया था कि मलखान और भंवरी के बीच प्रेम प्रसंग शुरू हुआ था। मलखान सिंह के माध्यम से ही भंवरी की मुलाकात महिपाल मदेरणा से हुई थी। मलखान व भंवरी के बीच प्रेम-प्रसंग काफी आगे बढ़ गया था। इसकी आंच मलखान के घर तक पहुंच गई थी। इसके बाद परिवार के कुछ सदस्यों ने भंवरी से पीछा छुड़ाने की योजना बनाई।

यह है मामला

भंवरी देवी प्रकरण की वजह से राजस्थान की सियासत में भूचाल आ गया था। इस हत्याकांड ने पूरे देश में सुर्खियां बटोरी थी। एक सितम्बर 2011 को जोधपुर जिले के बिलाड़ा थाने में भंवरी देवी के पति अमरचंद ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि उसकी पत्नी एएनएम भंवरी देवी लापता है। साथ ही उसने पत्नी के अपहरण की आशंका जताते हुए तत्कालीन राज्य सरकार में मंत्री महिपाल मदेरणा सहित दो-तीन लोगों पर शक जाहिर किया। इसके बाद यह मामला सुर्खियों में आ गया। मामले की जांच कुछ आगे बढ़ती, इस बीच राज्य सरकार ने विरोध को ध्यान में रखकर जांच सीबीआई को सौंप दी।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक पूजा खण्डेलवाल के लिए सांध्य ज्योति दर्पण प्रिंटर्स, डी.एल. टॉवर 3-ए-विद्याश्रम इंस्टीट्यूशनल एरिया, जेएलएन मार्ग, जयपुर से मुद्रित व सिन्धी कॉलोनी, गंगापुर सिटी से प्रकाशित।
प्रबंध सम्पादक विनोद कुमार गुप्ता. मो. 9887454960, ई-मेल:badhtikalam@gmail.com